'पद्मश्री सम्मान' से सम्मानित पूज्य श्रीरमेश बाबाजी महाराज

अनंत श्रीविभूषित महामना, जिन्हें भला कोई अलंकार क्या अलंकृत करेगा बल्कि स्वयं भूषण जिनकी कान्ति से भूषित होते हैं | बाबा महाराज ब्रज की एक विभूति हैं | भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित किया था परन्तु ब्रज-वसुंधरा का सानिध्य वे एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ सकते, अतः दिल्ली जाना सम्भव ही नहीं था | भारत सरकार द्वारा जिलाधिकारी के माध्यम से उनकी तपस्थली गह्वरवन बरसाना में ही इस सम्मान को दि.१६-५-२०१९ को दिया गया | यद्यपि ब्रजवासी इससे बहुत गर्वान्वित हुए परन्तु उनका कृतित्त्व इस लोक की समस्त उपलब्धियों से बहुत ऊपर है |

सम्मान-पत्र एवं स्मृति-चिह्न

'पद्मश्री' पुरस्कार प्रदान करने आये शासनाधिकारियों को श्रीबाबा द्वारा उद्बोधन (१६ मई २०१९)

संकलन एवं लेखन- संतश्री भामिनीशरण जी, मानमन्दिर बरसाना

श्रीरमेश बाबाजी महाराज को भारत सरकार की ओर से 'पद्मश्री' पुरस्कार प्रदान करने आये मथुरा के जिलाधीश व अन्य महत्वपूर्ण अधिकारियों के प्रति श्रीबाबामहाराज ने अपने हार्दिक उद्गार इस प्रकार व्यक्त किये –

"मेरे लिए कुछ बोलना परमावश्यक है क्योंकि जो प्रशासनिक अधिकारी यहाँ आये हुए हैं, इन्हें अपने अधिकार का सच्चा ज्ञान होना चाहिए और वह ज्ञान मैं तो नहीं दे सकता परन्तु श्रीजी की प्रेरणा से वे जो कुछ कहला रही हैं, वही मैं कह रहा हूँ - ब्रजवास करते हुए मुझे ६६ वर्ष हो गए हैं | अपने घर से यहाँ आते समय मेरे मन में एक जिज्ञासा थी कि ब्रज कैसा होगा ? जैसा मैंने सोचा था, युग के प्रभाव से उसके विपरीत स्वरूप ब्रज का दिखाई पड़ा | मैंने ब्रज में आते ही देखा कि यहाँ के दिव्य कुण्ड नष्ट हो रहे हैं, पर्वतों का खनन किया जा रहा है, वन कट रहे हैं, लताएँ कट रही हैं, यमुनाजी दूषित हो रही हैं, राधा-माधव की लीला स्थलियाँ नष्ट हो रही हैं | यह सब देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ | उस समय मानमंदिर पर मेरे साथ सहयोग में थोड़े से ब्रजवासी थे, जो रात को यहाँ कीर्तन किया करते थे | आवश्यकता पड़ने पर हम लोग रात को ही कीर्तन के पश्चात् गह्वरवन में स्थित राधा सरोवर की सफाई किया करते थे | हम थोड़े ही लोग सारी रात कुण्ड की कीच को साफ करने के लिए फावड़ा चलाते थे | सारी रात श्रम करने पर कुण्ड साफ हो जाता था | तदनन्तर मानमंदिर द्वारा ब्रजभूमि की सेवा हेतु बहुत से कार्य किये गए, समयाभाव के कारण उनके बारे में अभी नहीं बताया जा सकता | संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि 'राधासरोवर' के शोधन के बाद मानमंदिर सेवा संस्थान द्वारा ब्रज के अनेकों कुण्डों का शोधन किया गया, उसके कारण सारे ब्रज में जाग्रति की लहर दौड़ गई | अनेकों संस्थाएँ बनीं और वे ब्रज के सरोवरों व मंदिरों के भी जीर्णोद्धार में तत्पर हो गयीं किन्तु इतना होने पर भी मुझे संतोष नहीं हुआ | यमुनाजी आज ब्रज में नहीं है, उन्हें ब्रज में लाने के लिए मानमंदिर द्वारा यमुना आन्दोलन का शुभारम्भ किया गया परन्तु जो सफलता हम चाहते थे, वह प्राप्त नहीं हो सकी किन्तु यमुना जी के सन्दर्भ में समाज में एक अभूतपूर्व जाग्रति हुई, ब्रजवासी जागे और उसका यह प्रभाव हुआ कि ब्रज से दिल्ली तक यमुना आन्दोलन के अंतर्गत जो यमुना यात्रा की गई उसमें लाखों लोग जंतर-मंतर पहुँचे | मैं तो वहाँ नहीं गया था किन्तु लोग बताते हैं कि वह बहुत विशाल आन्दोलन था और उसका बहुत ज्यादा प्रभाव सरकार पर पड़ा, सरकार भी यमुना के सन्दर्भ में अपनी गाढ़ निद्रा से जगी, उसने कुछ कार्य करना शुरू किया | काम हो रहा है और मुझे केवल आशा ही नहीं अपितु भगवान् पर विश्वास है कि अति शीघ्र ही यमुना जी स्वच्छ हो जायेंगी | तीन-चार बार मानमंदिर द्वारा 'यमुना आन्दोलन' किया गया, जो कि भारतवर्ष का एक बहुत बड़ा आन्दोलन था, उसके बाद स्वयं ही सरकार कुछ करने लगी, इस तरह से ब्रज का कार्य होता रहा | श्रीजी की कृपा से गायों की ओर भी हमारी दृष्टि गई | मानमंदिर सेवा संस्थान के द्वारा गोरक्षा व सेवा के लिए मात्र चार गायों के साथ श्रीमाताजी गौशाला की स्थापना की गई और उनकी कृपा से आज इस गौशाला में ६० हजार से अधिक गायें हैं, जो भारतीय मूल की गायों की विश्व में सबसे बड़ी गोशाला है | इस गौशाला में गोसेवा हेतु किसी से दान की याचना नहीं की

जाती है | गोसेवा के लिए आज तक मानमंदिर का कोई भी सदस्य किसी के दरवाजे दान माँगने नहीं गया | इस गोशाला में प्रतिदिन का २५ लाख रुपये का व्यय है और किसी से बिना याचना के उसकी पूर्ति हो रही है | इसके लिए मैंने संकीर्तन-आराधना प्रारम्भ की क्योंकि भगवान् की आराधना से ही सभी कार्य सम्पन्न होते हैं | इस आराधना के माध्यम से मेरा एक मुख्य लक्ष्य यह भी था कि नारी शक्ति का उत्थान हो जाए क्योंकि पुरुष प्रधान समाज के ही द्वारा सदियों से नारी-शक्ति बहुत दूषित और कलंकित हुई जबकि यह श्रीजी का रूप है | मानमंदिर के इस रसमण्डप भवन में यहाँ की दिव्य नारी-शक्ति द्वारा प्रतिदिन सायं ६ से ७:३० बजे तक तक आराधना की जाती है जिसमें सौ से अधिक कन्याएँ अपने इष्टदेव श्रीअक्षययुगल ठाकुर जी (श्रीराधामाधव युगल सरकार) को रिझाने के लिए डेढ़ घंटे तक नृत्य करती हैं | इसी अलौकिक नृत्याराधना के फलस्वरूप श्रीमाताजी गौशाला का कार्य चलता है तथा इसी के प्रभाव से मानमंदिर द्वारा प्रतिवर्ष संचालित श्रीराधारानी ब्रजयात्रा निःशुल्क रूप से ब्रजभक्तों की ४० दिनों तक सफलतापूर्वक सेवा करने में सक्षम है | इस ब्रजयात्रा को भी हमें उठाना पड़ा क्योंकि वृन्दावन से ऐसी भी ब्रजयात्रायें संचालित की गयीं, जिसमें प्रति व्यक्ति को ५० हजार रुपये तक शुल्क देना पड़ता था, यह देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ और मैंने सोचा कि जो आदमी ५० हजार रुपये नहीं दे सकता, वह तो ब्रजयात्रा का लाभ ही नहीं उठा सकता अतः मेरे हृदय में निःशुल्क ब्रजयात्रा चलाने का विचार उत्पन्न हुआ और सन् १९८८ से निःशुल्क ब्रजयात्रा का शुभारम्भ किया गया और यह पूर्णरूपेण सफल हुई | इस यात्रा में सम्पूर्ण भारत से प्रतिवर्ष १५ हजार से अधिक लोग सम्मिलित होते हैं और ४० दिनों तक वे निःशुल्क ब्रज-परिक्रमा का लाभ उठाते हैं, इसके अंतर्गत उन्हें ४० दिनों तक भोजन, टेंट-आवास, औषधि आदि की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध कराई जाती है | यह विश्व की सबसे बड़ी निःशुल्क पदयात्रा है, जिसका श्रीगणेश बरसाना से होता है | इसी के साथ, भारतीय मूल की गायों की विश्व की सबसे बड़ी गौशाला भी बरसाना धाम में सेवारत है | इतने विशाल पुण्यकार्यों को चलाने वाली मानमंदिर सेवा संस्थान की ये दिव्य देवियाँ ही हैं, ये प्रतिदिन श्रीठाकुरजी के सामने नृत्याराधना करती हैं तथा शास्त्रों का अध्ययन करती हैं; इन्हीं देवियों में एक साध्वी मुरलिकाजी हैं, जो कि इस समय अमेरिका में प्रचार कर रही हैं, उन्हीं की छोटी बहन साध्वी श्रीजी भी विदेश यात्रा पर गई हैं | हाल ही में समाचार आया कि वह मानमंदिर के अपने सहयोगी संतों के साथ ऑस्ट्रेलिया पहुँच गई हैं, वहाँ पर उनका बहुत अधिक सम्मान किया गया | इस बार अमेरिका में वहाँ के सबसे बड़े हिन्दुओं के मंदिर 'मंगल मंदिर' में साध्वी मुरलिकाजी का प्रवचन कार्यक्रम हुआ | वहाँ के लोगों ने उस मंदिर में एक वर्ष पहले ही मुरलिका जी के कार्यक्रम की बुकिंग करा ली थी | उनके कार्यक्रम के पश्चात् वहाँ के लोगों ने जो धनराशि भेंट की, उसे मुरलिकाजी ने नहीं लिया, उन्हीं को वापस कर दी | अमेरिका के महत्वपूर्ण टी.वी. चैनलों की ओर से मुरलिकाजी का इंटरव्यू लिया गया | अपने भाषण में उन्होंने कहा कि हम लोग पैसे के लिए अमेरिका नहीं आये हैं | लोगों को भ्रम है कि भारतीय प्रचारक, कथावाचक अथवा भारतीय साधु पैसे के लिए अमेरिका में कथावाचन करते हैं | तीन लिफाफों में लोग डॉलर लेकर भेंट करने आये किन्तु मुरलिकाजी ने इस धनराशि को स्वीकार नहीं किया, उन्हीं को वापस लौटा दिया | मान मन्दिर में १०० से अधिक साध्वियाँ ब्रजधाम-सेवा और जन-कल्याणकारी कार्यों में सहयोग कर रही हैं | विदेश यात्रा के लिए वीजा का प्रावधान होता है, यदि वीजा की समस्या

न हो तो मानमन्दिर की ये साध्वियाँ ही सम्पूर्ण विश्व में सनातन धर्म का प्रचार करने के लिए पर्याप्त हैं | इनमें से कुछ साध्वियाँ निःस्वार्थ भाव से प्रचार करने के लिए विदेश यात्रा पर गयी हुई हैं, कहीं भी वे धन की याचना नहीं करती हैं | अब मूल विषय पर लौटते हुए गौ-महिमा के बारे में हम इन शासन अधिकारियों को कुछ बताना चाहते हैं | देखो भारतवासियो ! तुम चाहे भारत के अधिकारी हो अथवा कोई भी हो, पहले भारत क्या है, इसे समझो, शासन पीछे करना,पहले तो तुम अपने देश को समझो | हमारे शास्त्रों में प्राचीनकाल से ही यह उद्घोष किया गया है – "गावो विश्वस्य मातरः" अर्थात् गायें सारे संसार की माताएँ हैं | अनादिकाल से, वैदिक काल से हमारे देश में गायों के चमत्कार की कथाएँ प्रचलित हैं | वैदिक काल में सत्यकाम जाबाल नामक एक ब्राह्मण बालक थे, जिन्होंने केवल गो- सेवा के प्रताप से दुर्लभ ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति की | इसके पीछे अत्यंत विस्तृत कथा है, संक्षेप में उसका सार यह है कि जिस गुरुकुल में वह विद्याध्ययन करने गये थे, वहाँ ऋषियों ने उन्हें कुछ गायों की सेवा करने के लिए वन में भेजा और कहा कि जब इन गायों की संख्या एक हजार हो जाये तब तुम हमारे आश्रम पर लौटकर आना | सत्यकाम जाबाल वन में उन गायों को ले जाकर अत्यंत निष्ठा के साथ उनकी सेवा करने लगे | जब इन गायों की संख्या एक हजार हो गयी तो गोवंश ने स्वयमेव ही इनसे कहा – "सत्यकाम ! अब हमारी संख्या एक हजार से अधिक हो गयी है, अब तुम हमें लेकर गुरुदेव के आश्रम पर चलो, ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति तुम्हे स्वतः ही हो जाएगी |" गोवंश का वचन सत्य सिद्ध हुआ और मात्र गौ-सेवा के प्रताप से 'सत्यकाम जाबाल' को देवदुर्लभ ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हो गयी; यह घटना सतयुग की है | त्रेता में भगवान् राम ने गायों की रक्षा की | उनके बारे में गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा –

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार |
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ||

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड -१९२)

रघुवंश में भगवान् राम व उनके पूर्वज रघु से भी पहले हुए राजा दिलीप, वह संतानहीन थे अतः उनका वंश नष्ट होने के कगार पर था किन्तु गुरु वशिष्ठ के आदेश से उन्होंने अत्यंत निष्ठापूर्वक गो-सेवा की, उनकी इस अद्भुत गोसेवा की महाकवि कालिदास ने अपने ग्रन्थ में इतनी प्रशंसा की है कि जिसका थोड़े शब्दों में वर्णन नही किया जा सकता | दिलीप की गो-सेवा के प्रभाव से ही आगे रघुवंश चला | अनन्तर, द्वापर युग में भगवान् श्रीकृष्ण प्रकट हुए, वह गोचारण करने के लिए प्रतिदिन वन-वनान्तरों में जाया करते थे | एक दिन यशोदा मैया ने उनसे कहा – "लाला ! तू सारे वन प्रदेश में गायें चराता है, इसलिए पाँवों में जूता पहन और धूप से बचने के लिए छतरी धारण कर |" माता ईश्वरी होती है परन्तु कन्हैया ने माता की इस आज्ञा पर उत्तर दिया –

गोपालनं स्वधर्म्मो नस्तास्तु निश्छत्र-पादुकाः ।

(गोविन्दलीलामृत, पंचमसर्ग – २८)

मैया ! गोपालन करना हम लोगों का धर्म है | गायें कौन हैं, हे माताजी ! इसे समझो, ये हमारी इष्ट हैं, ये छतरी नहीं लगातीं, पादुका नहीं पहनतीं | अपने इष्ट के सामने हम छतरी लगायें और जूता पहनें, यह ठीक नहीं है | हमारा इष्ट जब नंगे पाँव है तो हम पन्हैया (जूता) कैसे पहन सकते हैं | सबसे बड़ा धर्म यही है –

यथा गावस्तथा गोपास्तर्हि धर्म्मः सुनिर्म्मलः ॥

जिस प्रकार गायें रहती हैं, वैसे ही गोपालक को भी होना चाहिए | इससे क्या होता है, इससे देश में एक निर्मल धर्म की स्थापना होती है –

धर्मादायुर्यशो वृद्धिर्धर्म्मो रक्षति रक्षितः ।

इस निर्मल धर्म की रक्षा करने से आयु और यश की वृद्धि होती है | इस धर्म का यदि हम सेवन करेंगे तो यह धर्म हमारी रक्षा करेगा, देश की रक्षा करेगा | देश मजबूत होगा और देश के मजबूत होने के बाद फिर सारे विश्व का कल्याण होगा | इसलिए –

स कथं त्यज्यते मातर्भीषु धर्म्मोऽस्ति रक्षिता ॥

(गोविन्दलीलामृत, पंचमसर्ग – २९)

हे मैया (यशोदा) ! ऐसी स्थिति में हम इस धर्म का त्याग कैसे कर सकते हैं ? भय की घड़ियों में यह धर्म हमारी रक्षा करता है | इस गोसेवा रूपी धर्म की रक्षा के प्रभाव को श्रीकृष्ण ने प्रत्यक्ष रूप से ब्रजवासियों को दिखाया | जब वह केवल छः दिन के थे तो उन्हें मारने के लिए राक्षसी पूतना अपने स्तनों पर भयंकर कालकूट विष का लेपन करके आयी किन्तु ब्रजवासियों द्वारा गोसेवा के प्रताप से बालकृष्ण की रक्षा हुई | इसके बाद कंस द्वारा भेजे गये जितने भी असुर ब्रज में आये, सबका विनाश हो गया | कालियनाग का विष इतना भयावह था कि सारा 'यमुना-जल' दूषित और विषैला हो गया | उसको पीने से ब्रजवासियों और गायों की मृत्यु हो गयी थी किन्तु उसका दमन करने के लिए श्रीकृष्ण उसकी चपेट में आ गये और उनकी कुछ भी हानि नहीं हुई; उन्होंने संसार को दिखा दिया कि गोसेवा हमारी आयु को बढ़ाने वाली है | 'धर्म्मो रक्षति रक्षितः' - इस गोसेवा रूपी धर्म का यदि हम ठीक से पालन करें तो इस गोपालन धर्म की रक्षा से हमारा देश शक्तिशाली बनेगा | कालियनाग के दमन के पश्चात् 'अघासुर' अजगर के रूप में गोविन्द के समक्ष आया तो वह उसके मुख के भीतर प्रवेश कर गए और सुरक्षित बने रहे | इस प्रकार अनेकों अवसरों पर उन्होंने दिखाया कि गोसेवा के प्रताप से ही मेरी और ब्रजवासियों की मृत्यु से रक्षा हुई | एक बार जब वन में दावाग्नि लगी तो उसके कारण सारा ब्रज जलने लगा किन्तु भगवान् ने उस दावानल का पान कर लिया और माता यशोदा से कहा – "मैया ! यह सब गोसेवा का चमत्कार है |" इसलिए देश का कल्याण होगा, सम्पूर्ण विश्व का कल्याण होगा, यदि हमलोग इस भावना से कुछ करते हैं, शासन करते हैं अथवा कुछ भी कार्य करते हैं तो सबसे पहले यहाँ के शासकों को ध्यान देना चाहिए | मैं तो कहीं आता-जाता नहीं हूँ किन्तु यदि कोई अधिकारी मेरे पास आता है तो उसके सामने ये विचार प्रस्तुत करता हूँ, उसके कानों में इन विचारों को डाल देता हूँ कि भैया ! तुम सच्चे भारतवासी बनो | देश को मजबूत बनाओ | देश मजबूत कैसे बनेगा, इसका उपाय स्वयं भगवान् ने बताया है – 'धर्म्मो रक्षति रक्षितः' – देश की रक्षा होगी गाय की सेवा से, इससे देश की आयु और इसका यश बढ़ेगा | द्वापर में ब्रजवासियों की गोसेवा के प्रताप से सारे संसार में ब्रज का यश बढ़ा, जिससे भगवान् श्रीकृष्ण का यश बढ़ गया |

हमारा मानमंदिर, जो किसी समय डाकुओं का अड्डा था, आज इस संस्थान के माध्यम से सम्पूर्ण भारत में प्रभात फेरियाँ चलाई जा रही हैं, देश में मजबूती आ रही है | श्रीनरेन्द्रमोदीजी ने लोकसभा चुनाव में जो विलक्षण विजय प्राप्त की, वह हमारे यहाँ की संकीर्तन-आराधना का ही परिणाम है | हमलोग कहीं किसी का प्रचार करने नहीं जाते हैं किन्तु हृदय में भाव रखते हैं कि 'सत्य' बलवान बने, 'सत्य' जीते, धर्म बढ़े, विश्व का कल्याण हो | ये भावनाएँ हम लोग अवश्य रखते हैं और इन भावनाओं को स्पष्ट रूप से कह देते हैं, किसी से डरते नहीं हैं | हमलोग किसी पार्टी विशेष से नहीं जुड़े हैं किन्तु इस वर्ष के चुनावों में हमने देखा कि सत्तर पार्टियाँ मोदी जी के विरुद्ध एकजुट हो गयी हैं और मोदीजी अकेले हैं परन्तु ये सत्तर राजनैतिक दल मिलकर भी कुछ नहीं कर पायेंगे, न कर पाए | 'जहाँ सच्चाई है, त्याग है' उसकी अवश्य विजय

होती है | मानमंदिर की कन्याओं का शुद्ध आचरण है, उनमें त्याग है; डेढ़ घंटे तक वे नृत्य के द्वारा प्रतिदिन भगवान् की आराधना करती हैं, प्रातःकालीन प्रभात फेरी में संकीर्तन के साथ नित्य ही बरसाने की परिक्रमा लगाती हैं; ये समस्त साध्वियाँ संयम-नियम की साकार प्रतिमाएँ हैं, इसीलिए हम अवश्य बढ़ रहे हैं और मानमंदिर बढ़ता जाएगा | बहुत से लोगों ने माताजी गौशाला पर आक्षेप किया, इसके विरुद्ध कोर्ट में मुकदमा किया, यह मुकदमा आगरा और कानपुर तक गया किन्तु इससे कुछ भी हानि नहीं हुई | कुछ समय पूर्व भी कुछ लोगों ने गौशाला को नष्ट करने का प्रयास किया क्योंकि ईर्ष्यालु लोग सब जगह रहते हैं | नष्ट होने के विपरीत माताजी गौशाला में बीमार गायों की चिकित्सा हेतु १५ करोड़ रुपये की राशि से बहुत विशाल 'गो-चिकित्सालय' का निर्माण हो रहा है | विश्व में कहीं भी गायों के लिए एक भी अस्पताल नहीं है | यह अस्पताल भी लगभग बन ही चुका है | यह क्या है, ये केवल गोसेवा का फल है | हमारे यहाँ ईमानदारी से गोसेवा होती है, यहाँ के लोग ईमानदार हैं इसलिए हमें किसी के सहयोग की आवश्यकता नहीं है | यदि कोई सहायता करता है तो वह स्वयं अपना कल्याण करता है | जो लोग गोसेवा में सहायता कर रहे हैं, विश्व की सेवा कर रहे हैं, वे सारे विश्व की जीविका की रक्षा का उपाय कर रहे हैं | ऐसे कल्याणकारी कार्यों में जो सहयोग करते हैं, उनके बारे में भागवत में लिखा है –

कर्तुः शास्तुरनुज्ञातुस्तुल्यं यत्प्रेत्य तत्फलम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी ४/२१/२६)

ऐसे मंगलकारी कार्य को करने वाला, कराने वाले और अनुमोदन करने वाले को समान फल मिलता है | इसलिए जितने भी शासनाधिकारी हैं, वे यदि गोसेवा के पुनीत कार्य का हृदय से अनुमोदन करेंगे तो उनके पूर्वजों, उनके माता-पिता का उद्धार होगा | भागवत में नृसिंह भगवान् ने कहा है –

त्रिःसप्तभिः पिता पूतः पितृभिः सह तेऽनघ ।
यत्साधोऽस्य गृहे जातो भवान् वै कुलपावनः ॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/१०/१८)

उनकी २१ पीढ़ियों का उद्धार हो जाएगा |"

ब्रजबालिका साध्वी श्रीजी द्वारा ऑस्ट्रेलिया व फिजी में प्रचार

लेखिका- बालसाध्वी ब्रजलता जी, दीदीजी गुरुकुल, मानमन्दिर, बरसाना

मान मन्दिर सेवा संस्थान की एक और ओजस्विनी वक्त्री साध्वी श्रीजी, जो कि साध्वी मुरलिकाजी की छोटी बहिन हैं और सद्गुरुदेव श्रीरमेशबाबामहाराजजी की अनन्य कृपापात्रा हैं, विगत कई वर्षों से वे फिजी और सिंगापुर में ब्रज-संस्कृति और पर्यावरण की संरक्षा हेतु प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं | इस बार इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु १५ मई से वे ऑस्ट्रेलिया के दौरे पर हैं | ऑस्ट्रेलिया के अनिवासी भारतीयों के मध्य वे डेढ़ महीने तक अपने व्यस्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा पर्यावरण सुरक्षा और ब्रजभूमि की महत्ता के बारे में ज्वलन्त अभियान चलायेंगी | ऑस्ट्रेलिया के बाद वह १ महीने तक फिजी यात्रा के दौरान वहाँ के निवासियों की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना को एक बार पुनः जागृत करेंगी | इस बार ऑस्ट्रेलिया की यह उनकी प्रथम यात्रा है | साध्वी श्रीजी के साथ मानमन्दिर के प्रख्यात संत श्रीनृसिंहदासजी महाराज, संत श्री गिरधरजी और साध्वी किशोरीजी उनके साथ इस विदेश यात्रा में सम्मिलित होकर शास्त्रीय संगीत की ब्रजरसमयी कलात्मक प्रस्तुति द्वारा इस जन कल्याणकारी अभियान में विलक्षण रूप से सहयोग कर रहे हैं | मानमन्दिर के निष्काम प्रचारकों की यह दूसरी टीम है जो सद्गुरुदेव परम विरक्त संत ब्रजाचार्य श्री श्रीरमेशबाबाजी महाराज के निर्देशन में विदेश प्रवास के दौरान ब्रज-संस्कृति और पर्यावरण की सुरक्षा हेतु निःस्वार्थ भाव से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सेवा में तत्पर है |

ब्रजबालिका साध्वी मुरलिकाजी अमेरिका दौरे पर

लेखिका- बालसाध्वी कमलकिशोरी जी, दीदीजी गुरुकुल, मानमन्दिर, बरसाना

मानमंदिर की परम विदुषी एवं अति निःस्पृह वक्त्री साध्वी मुरलिकाजी इन दिनों ब्रज-संस्कृति एवं पर्यावरण की सुरक्षा के सन्दर्भ में प्रचार हेतु संयुक्त राज्य अमेरिका में हैं | मई से सितम्बर तक चार माह पर्यन्त उनका अमेरिका और कनाडा में अत्यंत व्यस्त, व्यापक प्रचार कार्यक्रम रहेगा | साध्वी मुरलिकाजी के साथ उनके ताऊजी डॉ. श्रीरामजीलालशात्री एवं अनुज श्रीराधिकेशजी भी इस विदेश यात्रा में साथ गये हैं |

जैसा कि सर्वविदित है कि साध्वी मुरलिकाजी बरसाना के गह्वरवन स्थित परम विशुद्ध ब्रजवासियों के सदन श्रीराधारसमंदिर में जन्मी हैं, जहाँ उनकी दादीजी परम भक्तिमती, अति श्रद्धेया श्रीमती यमुनाजी के द्वारा अतिथि-वैष्णवों की सेवा का ऐसा उत्कृष्ट कोटि का आदर्श उपस्थित किया गया है, जो इस भीषण कलिकाल में अन्यत्र दुर्लभ है | आज भी श्रीराधारसमंदिर से कोई भी अतिथि भूखा नहीं लौटता, प्रतिदिन हजारों की संख्या में अतिथि वैष्णवगण यहाँ अन्न प्रसाद ग्रहण कर अपने आप को कृतकृत्य मानते हैं | ऐसे ही परम पावन आदर्श ब्रजवासियों के परिवार में जन्मी, उन्हीं के द्वारा प्रदान किये गए दिव्य संस्कारों द्वारा पालित-पोषित एवं सद्गुरुदेव अनिर्वचनीय महिमा सम्पन्न अनन्त श्रीयुत परम श्रद्धेय श्रीश्रीरमेशबाबाजी महाराज की छत्रछाया में दिव्य आध्यात्मिक ज्ञान, उच्च त्याग-वैराग्य एवं निष्किंचना (निर्गुणा) भक्ति से ओतप्रोत साध्वी मुरलिकाजी अमेरिका में विगत कई वर्षों से ब्रज-संस्कृति एवं पर्यावरण की रक्षा के सम्बन्ध में वहाँ रहने वाले अनिवासीय भारतीयों के मध्य जाग्रति उत्पन्न कर रही हैं | मुरलिकाजी की परम त्यागमय जीवन शैली उनके अद्भुत पाण्डित्य और जनकल्याण के प्रति उनकी अति निःस्वार्थ सेवा परायणता से अमेरिका के प्रबुद्ध भारतीय नागरिक बहुत अधिक प्रभावित हैं और वे प्रतिवर्ष मुरलिकाजी को आमंत्रित करते हैं और इस देश के अनेकों राज्यों में उनके कार्यक्रमों का आयोजन कर अत्यधिक श्रद्धा के साथ उनके उपदेशामृत का श्रवण कर भौतिकता की चकाचौंध से ग्रसित एवं दूषित आधुनिक पश्चिमी सभ्यता के मायाजाल से मुक्त होकर सादा जीवन और उच्च विचारों वाली आदर्श ब्रज-संस्कृति, ब्रज-पर्यावरण के प्रति जागरूक होकर विश्व-पर्यावरण की सुरक्षा में भी प्रशंसनीय योगदान दे रहे हैं | जिस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी में स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका में भारतीय सनातन संस्कृति के दिव्य ज्ञान का प्रचार कर पश्चिमी देशों में भारत का गौरव बढ़ाया था, उसी प्रकार वर्तमानकाल में साध्वी मुरलिकाजी भी पर्यावरण और सांस्कृतिक सुरक्षा के सम्बन्ध में निष्काम भाव से प्रचार कर अमेरिका और कनाडा जैसे अति विकसित पश्चिमी देशों में भारतभूमि की दिव्य यश पताका को गौरवपूर्ण ढंग से फहरा रही हैं |

जीव भाग रहा है और मृत्यु उसका पीछा कर रही है | हम लोग खाते क्यों हैं? मर न जाएँ | कपड़े क्यों पहनते हैं? मर न जाएँ, मकान क्यों बनाते हैं? शरीर रक्षा के लिए | यह जीव हर समय भाग रहा है और काल रूपी सर्प इसका पीछा कर रहा है | जहाँ जिस योनि में जाता है, काल इसको खा जाता है, लेकिन जब यह भगवान् के चरणों को पकड़ लेता है, तब आराम से सोता है फिर इसको देखकर काल भी भागता है, मौत भागती है |

सुसंस्कारमय एक आदर्श बालव्यासाचार्या 'मधुवनीजी'

लेखिका- बालसाध्वी अनीता जी, दीदीजी गुरुकुल, मानमन्दिर, बरसाना

प्रायः देखा जाता है कि हर प्राणी अपने गुण,स्वभावानुसार एक-दूसरे से भिन्न होता है | इस भिन्नता के पीछे एक बहुत बड़ा रहस्य होता है | हमारा हर छोटे से छोटा कर्म हमारे मन मस्तिष्क में एक अमिट छाप बनकर अंकित हो जाता है, जो देश, काल, परिस्थिति व विभिन्न परिवेशानुसार प्रकट व अप्रकट होता रहता है | यही कारण है कि कोई भी बुद्धिमान प्राणी प्रतिक्षण अपने कर्म विधान के प्रति सदैव सजग रहेगा | एक राक्षसकुल में उत्पन्न होने के बाद भी प्रह्लादजी ऐसे परम वैष्णव बने कि त्रिलोकी में उनके सदृश उस समय कोई दिखाई नहीं पड़ता था | परन्तु उनमें ऐसे सुसंस्कार आये कैसे ? यह सभी जानते हैं कि जब हिरण्यकशिपु तपस्या करने गया था तो इन्द्र ने प्रह्लादजी की माता कयाधू का हरण कर लिया था | उसी समय श्रीनारदजी ने इन्द्र को रोककर कहा था कि यह अनर्थ तुम कैसे करने जा रहे हो ? इसके गर्भ में तो परम वैष्णव बालक प्रह्लाद है जिसके कारण भगवान् नृसिंह का अवतार होगा | तब इन्द्र 'कयाधू' को वहीं छोड़कर चले गए और गर्भस्थ शिशु नारदजी के द्वारा दिन-रात भगवन्नाम-रूप-गुणसुधासिंधु का रसपान करता रहा | बालक प्रह्लाद ने न केवल आत्मकल्याण किया अपितु असुर बालकों को भी भक्तिपथानुगामी बना दिया और कहा –

कौमार आचरेत्प्राज्ञो धर्मान् भागवतानिह ।
दुर्लभं मानुषं जन्म तदप्यध्रुवमर्थदम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/६/१)

कुछ ऐसी कहानी बालव्यास साध्वी मधुवनीजी की है | बहुत छोटी आयु में मातृ-वियोग हो गया तो इनके पिताश्री ने इस बालिका को बरसाना धाम स्थित श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान के परम विरक्त संत श्रीरमेश बाबाजी की शरण में समर्पित कर दिया | ऐसे महापुरुष जिन्होंने अपने जीवन में कभी सुख, भोग, धन-धान्य की मानसिक कल्पना ही नहीं की तो भला वे भौतिक रूप में लिप्त कैसे होते ? ऐसे परम वीतरागी संतों के सम्मुख कभी माया का प्रवेश संभव नहीं है | मायातीत महापुरुष के संग ने अति कौमारावस्था में ही देवी मधुवनी को दिव्य गुणों से ओतप्रोत कर दिया | निश्चय ही उनमें पूर्व जन्मों के संचित संस्कार तो रहे ही होंगे परन्तु बाबा महाराज की सन्निधि ने उन पावन संस्कारों को लोककल्याण का हेतु बना दिया | जो अवस्था खेल-कूद की देखी जाती है, उस अवस्था में सतत् भगवद्गुणगान में अनुरक्ति ने देवी को एक दिव्य विभूति बना दिया | गीता, रामायण के साथ-साथ पूज्य गुरुदेव से श्रीमद्भागवत के गूढ़ रहस्यों का सांगोपांग अध्ययन करने लगीं | भटकते प्राणियों को सन्मार्ग प्रशस्त हो सके, इस भावना ने उन्हें ८ वर्ष की अवस्था से भागवत वक्त्री के रूप में ला खड़ा किया |

बाल विदुषी देवी मधुवनी मध्यप्रदेश के जनपद सागर में एक आमंत्रण पर 'श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ' के लिए १२ अप्रैल २०१९ को पहुँचीं तो लोगों को लगा कि छोटे-छोटे बच्चे बरसाना से आये हैं, इनमें वक्ता कौन होगा ? जिस समय शुकदेवजी परीक्षितजी को कथा का श्रवण कराने पहुँचे थे तो मूढ़ बालक-बालिकाएँ व स्त्रियाँ उन्हें पागल समझकर पत्थर मार रहे थे परन्तु बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों द्वारा जब शुकदेवजी का स्वागत सत्कार हुआ तो वे सब बच्चे-बच्चियाँ भय के कारण वहाँ से भाग गये | इसी प्रकार जब प्रथम दिवस की कथा प्रारम्भ होने वाली थी तो देवी मधुवनी ने कहा कि हम चाहते हैं कि हम न केवल भागवत सप्ताह तक सीमित रहेंगे अपितु चाहते हैं

कि यहाँ घर-घर, गाँव-गाँव भगवन्नाम की अविरल धारा सतत् प्रवाहित होने लगे | अतः रोजाना किसी एक गाँव में चलेंगे और हर गाँव में 'संकीर्तन प्रभात फेरी' प्रारम्भ कराने का प्रयास करना चाहेंगे | भगवन्नाम इस कलिकाल का एकमात्र आधार है तथा इसके व्याज से समाज में प्रेम, मैत्री, सौहार्द स्थापित करने की भी हमारी भावना है, फिर क्या था ? उनकी वाणी व मुखाभा ने सम्पूर्ण ग्रामवासियों का मन मोह लिया | सभी ग्रामवासी प्रतिदिन अपने ग्राम बन्दरयाहू (रतनपुर) में तो प्रभातफेरी धूमधाम से करते, उसके पश्चात् एक या इससे अधिक गाँवों में पहुँचकर वहाँ प्रभातफेरी करते | इसे देखकर गाँव की भीड़ एकत्रित हो जाती और उन्हें संबोधित करके दिव्य वातावरण उपस्थित हो जाता | सात-दिन पर्यन्त यही क्रम चलता रहा और लगभग १०-१२ गाँवों में न केवल प्रभात फेरी प्रारम्भ हुई अपितु कई गाँवों में तो लोगों ने जुआ, शराब आदि दुर्व्यसनों को तत्काल छोड़ दिया | बाल साध्वी ने सप्ताह पर्यन्त सतत् हरिनाम संकीर्तन का मंगलमय वातावरण बनाये रखा | कथा के मध्य दिव्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया और हमारी संस्कृति की मूलभूता गौमाता के संरक्षण-संवर्द्धन के लिए भी प्रेरणा दिया | उन्होंने कहा कि जिन भगवान् श्रीकृष्ण की कथा आप श्रवण कर रहे हैं, उनसे अवश्य कुछ प्रेरणा लो | गोमाता नग्नपद भ्रमण करती है और न कोई छत्र रखती है तो प्रभु भी जब तक ब्रज में रहे, उन्होंने कभी पादत्राण और छत्र धारण नहीं किया | हम सबको भी गौमाता की सेवा नित्य अवश्य करनी चाहिए, इसी से सारी सृष्टि का कल्याण होगा | देवी मधुवनी ने आह्वान किया कि सभी स्त्री-पुरुष १ रुपया प्रतिदिन गौमाता की सेवार्थ निकालें और निकटस्थ गौशाला में प्रदान करें | देवी मधुवनी का कृतित्त्व व व्यक्तित्व ऐसा प्रतिबिम्बित हुआ कि हजारों लोगों को उन्होंने इस भागवत यज्ञ के मध्य भगवत्प्रेमानुरागी बना दिया | भागवती वार्ता यों तो आजकल घर-घर में हो रही है परन्तु जैसा उसका स्वरूप होना चाहिए, वह बहुत कम देखने को मिलता है | वक्ता कैसा हो, यह स्पष्ट कर दिया गया है फिर भी उन मानकों पर खरा उतरना आसान नहीं है | अर्थ-प्रधान जगत में प्राणी को अर्थ (धन) ही दिखाई देता है | देवी मधुवनीजी ने कथा के मध्य स्पष्ट कहा कि भागवत व्यापार के लिए नहीं है | धन की कामना से कथा करने वाला न आत्मकल्याण कर सकता है और न लोकहित | यही कारण था कि उनकी कथा में जल प्रकृति ने प्रकोप किया तो उस समय भी तीव्र वर्षा में भीजते हुए एक भी श्रोता ने छुपने का प्रयास नहीं किया और गिरिराजधारणलीला का वही दृश्य प्रतीत हो रहा था, जो भगवान् के समय घटित हुआ | जैसे ही गिरिराजलीला सम्पन्न हुई, बादल भी शांत हो गए | वक्ता जब कामनाशून्य होता है तो श्रोता भी वैसा बन जाता है, यह प्रत्यक्ष अनुभव किया गया | साध्वी ने सबसे बड़ा दान यही बताया कि केवल भगवन्नाम का दान किया जाय | इस अवसर पर उन्होंने कबीरदास जी का एक प्रसंग भी सुनाया | एक बार कुछ लोग कबीर के पुत्र कमाल को सत्संग के लिए अपने साथ ले गये, जहाँ अन्त में श्रद्धा के साथ बहुत-सी सामग्री कमाल को भेंट की गई, जिसे लेकर वे पिता के पास पहुँचे तो कबीरदास जी ने कहा –**डूबा वंश कबीर का, उपजा पूत कमाल |**
हरि का सुमिरन छाँड़ के, बाँध के लाया माल ||
परन्तु कमाल ने यह सुनने के बाद पुनः ऐसी गलती नहीं की | फिर वे कभी कथा में गये तो साथ में कुछ भी नहीं लाये तब पिता की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा और वे बोले – **कौड़ी से हीरा भया, हीरा से भया लाल |**
आधा भक्त कबीर था, पूरा भया कमाल ||
ऐसे संस्कारों में पली बालिका मधुवनीजी ने भी अपने त्यागमय व्यक्तित्व से सबका दिल जीत लिया |

मानमन्दिर बरसाना

मानमंदिर के संतों द्वारा गाँवों और स्कूलों में आध्यात्मिक जनजाग्रति अभियान

लेखिका- साध्वी चंद्रमुखी जी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीबाबामहाराज के मार्गदर्शन में मानमन्दिर सेवा संस्थान की साध्वियों और संतो द्वारा भारतवर्ष के ३५ हजार से भी अधिक गाँवों में भगवन्नाम का प्रचार किया गया है | श्रीमानमन्दिर द्वारा किये गए **'हरिनाम प्रचार'** की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें लोगों को 'जप-माला' पकड़ाकर के केवल अपने ही कल्याण हेतु 'नाम-जप' करने की सम्मति नहीं दी जाती अपितु व्यक्ति के साथ ही सारे समाज का कल्याण हो, इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए 'संकीर्तन प्रभात फेरी' का प्रचार किया जाता है जिसके माध्यम से लोग अपने गाँवों और नगरों में कीर्तन करते हुए भ्रमण करते हैं, जिससे अधिक से अधिक जीव भगवन्नाम सुनें और केवल भगवन्नाम श्रवण करने से ही उनका कल्याण हो जाए | स्वयं भी कलिपावनावतार श्रीचैतन्यमहाप्रभुजी ने कहा है

पशु-पक्षी कीट भृंग बोलि ते न पारे |
शुनि लेइ हरिनाम तारा सब तरे ||

पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि जीव-जन्तु जो भगवन्नाम का उच्चारण नहीं कर सकते हैं, वे भी उच्च संकीर्तन में नाम-ध्वनि को सुनकर भवबंधन से मुक्त हो जाते हैं, ८४ लाख योनियों के चक्र से उनका उद्धार हो जाता है | इसीलिए चैतन्यचरितामृत में महाप्रभुजी ने कहा है –

जपि लेते हरिनाम करिया निज साधन |
उच्च संकीर्तन करे परोपकारे ||

नाम-जप करने से केवल जपने वाले का ही कल्याण होता है परन्तु उच्च संकीर्तन की ध्वनि में भगवन्नाम श्रवण के द्वारा तो अनंत जीवों का उद्धार हो जाता है | इसीलिए श्रीमद्भागवत में अजामिलोपाख्यान में धर्मराज ने कहा है

तस्मात् सङ्कीर्तनं विष्णोर्जगन्मङ्गलमंहसाम् |
महतामपि कौरव्य विद्धयैकान्तिकनिष्कृतम् ||

(श्रीमद्भागवतजी ६/३/३१)

संकीर्तन (कई लोगों के द्वारा मिलकर किये सामूहिक कीर्तन) से एक व्यक्ति, एक गाँव-नगर और एक देश का ही नहीं बल्कि समस्त विश्व का मंगल होता है |

शास्त्र, आचार्य-महापुरुषों द्वारा समर्थित इस प्रकार के अखिल विश्वमंगलकारी नाम-संकीर्तन का अनन्य नामनिष्ठ संत शिरोमणि पूज्य चरण श्रीरमेशबाबाजीमहाराज की प्रेरणा से प्रभात फेरी के माध्यम से मानमन्दिर सेवा संस्थान के विरक्त साधुओं के द्वारा ब्रजमंडल के गाँवों में एक बार फिर से प्रचार किया जा रहा है | पूज्य श्री बाबा महाराज के मार्गदर्शन में मानमन्दिर के साधु सर्दी-गर्मी और सांसारिक सुख-सुविधाओं की परवाह किये बिना निष्काम भाव से स्वयं पूरे गाँव में कीर्तन करते हुए भ्रमण करते हैं और स्थान-स्थान पर ब्रजवासियों को नाम-संकीर्तन की शास्त्रों और नामनिष्ठ महापुरुषों द्वारा प्रशस्त महिमा का बखान करते हैं; ये संत कहीं से एक पैसे की भी याचना नहीं करते हैं, स्वयं के निजी वाहन द्वारा गाँव-गाँव में भ्रमण करते हैं, इन विरक्त संतों के इस निष्काम प्रचार की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि ये ब्रजवासियों की मधुकरी (पवित्र भिक्षान्न) माँगकर प्रचार करते हैं | गाँवों के साथ ही इन संतों ने मथुरा जनपद के कई स्कूलों में भी प्रचार किया है, जिसका यह परिणाम हुआ है कि कई स्कूलों में 'प्रह्लादसभा' नामक आध्यात्मिक कार्यक्रम का भी शुभारम्भ किया गया है, जिसके माध्यम से बच्चे भारतवर्ष के गौरवशाली संत यथा सूर, तुलसी, कबीर, मीराजी के पदों का गान करते हैं | इसके साथ ही स्कूलों में एक मंगलकारी अभियान यह भी चलाया जा रहा है कि

शिक्षकों द्वारा बच्चों की दैनिक उपस्थिति के लिए जो हाजिरी (attendance) ली जाती है, उसमें बच्चे 'अंग्रेजी सभ्यता की परम्परा यस सर, यस मैडम' के स्थान पर 'जय श्री राधे अथवा जय श्री कृष्ण' कहें | यह देखने में एक छोटी-सी बात लगती है किन्तु इसका प्रभाव दूरगामी है | प्रतिदिन 'जय श्री राधे, जय श्री कृष्ण' कहने से बच्चों में भक्ति के संस्कारों का उदय होता है और वे 'सनातनधर्मप्रधान भारतीय संस्कृति' से दूर नहीं हो पाते बल्कि दृढ़ता के साथ उससे जुड़े रहते हैं | स्कूलों में प्रचार के द्वारा मानमन्दिर के संतों द्वारा बच्चों को भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति के महत्त्व, भारत की प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की गरिमा तथा राष्ट्र भक्ति और ईश्वर भक्ति के प्रति भी जागरूक बनाया जा रहा है जिसका कि अंग्रजों द्वारा भारतीय धर्म और संस्कृति के पूर्णतया विनाश हेतु चलाई गयी धर्महीन, नैतिकताविहीन, गर्दभी के दुग्ध का पान कराने वाली आधुनिक शिक्षा व्यवस्था पर आधारित स्कूल-कॉलेजों में पूर्णतया अभाव है | भारत में आज निर्ममता पूर्वक गौमाता का वध किया जा रहा है, लोग गौमाता के महत्त्व और उसके प्रति अपने कर्त्तव्य से विमुख होते जा रहे हैं अतः मानमन्दिर के संत अपने प्रचार अभियान में गाँवों और स्कूलों में ग्रामवासियों और बच्चों को शास्त्र-प्रमाणित विश्वजननी गाय के माहात्म्य से भी अवगत करा रहे हैं और गौवध की पूर्णतया पाबन्दी व गौ-सेवा के प्रति भी लोगों को सचेत कर रहे हैं |

गोपालजी की गौमाता

तैंतीस कोटि देवता जिसमें, वही मेरी गौमाता है |
अंत समय में मोक्षदायिनी, प्रभु निर्मित गौमाता है ||
धरती की धारण क्षमता से, पूर्ण मेरी गौमाता है |
शस्य श्यामला करने के हित, जगत की प्राण प्रदाता है ||
गोमय इसका अतिगुणकारी, कोटि विनाशक पोषक है |
पञ्च गव्य वर्णित ग्रंथों में, सभी सुखों की दाता है ||
ब्रह्मा विष्णु महेश बसे हैं, वही मेरी गौमाता है |
अंत समय में मोक्ष दायनी, प्रभु निर्मित गौमाता है ||
माखन इसका इतना उत्तम, कान्हा भोग लगाते हैं |
राजा होकर ग्वालबाल संग, वन-वन गाय चराते हैं ||
गौशक्ति संपन्न कृष्ण ने, वत्सासुर को मारा था |
बकासुर की चोच तोड़कर, पूतना पकड़ पछाड़ा था ||
ऐसी शक्ति प्रदाता जग में, वही मेरी गौमाता है |
तैंतीस कोटि देवता जिसमें, वही मेरी गौमाता है ||
अंत समय में मोक्षदायिनी, प्रभु निर्मित गौमाता है ||

.....दामोदर प्रसाद शर्मा मैथिल

अहंशून्यता से अनन्याश्रय की सिद्धि

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'भक्ति के मूलभूत सिद्धान्त' (१०/७/२०१३) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी ललिता जी, मानमन्दिर, बरसाना

(गतांक से आगे-)

रावण का भी अहं छूट गया परन्तु हम जैसे लोगों का अहं नहीं छूटता है | गोस्वामीजी विनयपत्रिका में लिखते हैं-

"मोह दशमौलि तद्भ्रात अहंकार,
पाकारिजित काम विश्रामहारी |"

(विनयपत्रिका, पदसंख्या- ५८)

हे प्रभो ! दसमुखों वाला रावण तो मर गया, आपने उसे समाप्त कर दिया किन्तु मेरे भीतर मोहरूपी रावण और उसका भाई अहंकाररूपी कुम्भकर्ण बैठे हुए हैं | कुम्भकर्ण का इतना विशाल आकार था कि जब वह चलता था तो दस हजार सेना को वह केवल अपने पाँव से मसल देता था | उसको ज्यादा अस्त्र-शस्त्र नहीं चलाने पड़ते थे, वह अपनी एक टांग उठा के रख देता था तो हजारो बंदर मसल जाते थे | उसी प्रकार अहंकार रूपी कुम्भकर्ण भी हमारे हृदय में बैठा है | हमलोगों का अहंकार कभी नष्ट नहीं होता है | इन्द्र को जीतने वाला मेघनाद, काम है | काम भी हमारे हृदय में बैठा है | रावण मर गया, कुम्भकर्ण मर गया, मेघनाद मर गया | नहीं, ये सब हमारे भीतर बैठे हैं | **"कामादि खल दल गंजनम्"** गोस्वामीजी कहते है – हे प्रभो ! हमारे भीतर जो कामादि विकार बैठे हैं, इनको आप ही नष्ट कर सकते हैं | इसलिए यदि भक्ति का मूलभूत भाव 'दैन्य' हमारे भीतर आ गया तो नित्य धाम तक जाने का रास्ता साफ है | अन्यथा जैसा कि उदाहरण दिया गया कि हनुमानजी भगवान् हैं, शिव के अवतार हैं लेकिन उनका भी 'अहं' श्रीभगवान् ने भरतजी के द्वारा चूर्ण किया | जब लक्ष्मणजी को मेघनाद की शक्ति लगी थी, वह मूर्छित हो गये थे और हनुमानजी संजीवनी बूटी लेके आ रहे थे तो ऐसा प्रसंग आता है कि जब वह अयोध्या के ऊपर से आकाश में उड़ते हुए जा रहे थे तो रात्रि में उन्हें असुर समझकर भरतजी ने बिना फर का बाण चला दिया | ऐसा बाण जिसमें फर नहीं होता, वह निम्न श्रेणी का बाण होता है | उसका उपयोग कोई भी योद्धा नहीं करता, उस निम्न कोटि के बाण से भरतजी ने हनुमानजी को नीचे गिरा दिया फिर भी उनका 'अहं' नहीं गया | जब भरतजी ने हनुमानजी से कहा कि मेरे बाण पर बैठ जाइये तब –

सुनि कपि मन उपजा अभिमाना |
मोरें भार चलिहि किमि बाना ||

(श्रीरामचरितमानस, लंकाकाण्ड- ६०)

गोस्वामी तुलसीदासजी को लिखना पड़ा कि हनुमानजी के मन में अभिमान का उदय हुआ जबकि हनुमानजी उनके इष्ट थे, उन्होंने ही तुलसीदासजी को राम से मिलाया था | भरतजी की बात सुनकर हनुमानजी सोचने लगे कि मेरे बोझ से यह बाण कैसे चलेगा ? हनुमन्नाटक ग्रन्थ में लिखा है कि बाण के ऊपर जब हनुमानजी पर्वत लेकर बैठ गये और भरतजी ने बाण का संधान किया, धनुष की डोरी खींची, (डोरी खींचना ही मुश्किल हो जाता है) उसके बाद हनुमानजी संतुष्ट हो गये | टीकाकार लिखते हैं कि भरतजी के बाण ने ही हनुमानजी को लंका तक पहुँचाया था और रामजी के शिविर के पास पहुँचाकर वापस लौट गया था | कथनाशय है कि 'अहं भाव' अंत तक दुःख देता है | किसी के भी अंदर यदि 'मैं' पैदा हुआ तो खत्म हो गयी बात अर्थात् भक्ति आदि सब नष्ट हो जाती है |

इसलिए यह बड़ा कठिन मार्ग है कि हम कर्म करें और अहं न पैदा हो –

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥

(श्रीमद्भगवद्गीताजी ३/२७)

जीव कर्म करे और यह सोचे कि मैं नहीं कर रहा हूँ, यह बड़ा कठिन है | हमारे अन्दर 'अहं' है कि नहीं है, इसका थर्मामीटर क्या है ? जब तक तुम अपने को कर्ता मानोगे कि मैं करने वाला हूँ, तब तक तुममें 'अहं' है | कुछ भी करो तो यह सोचो -

जो कछु किया सो तुम किया, मैं कुछ किया नाहिं |
कहो कही जो मैं किया, तुमही थे मुझ माहिं ||

इसीलिए भक्त की भाषा अलग होती है | भक्त जब भी बोलेगा तो अंहकार रहित होकर के बोलेगा | इसका उदाहरण है कि स्वयं रामजी ने हनुमानजी की बहुत प्रशंसा किया कि हनुमान ! तुमने लंका कैसे जलायी, यह तो बड़ा कठिन कार्य था | लंका में प्रवेश करना ही कठिन था, वहाँ प्रवेश कर तुमने इतना दुष्कर काम कैसे कर लिया – **नाघि सिंधु हाटकपुर जारा ।**
निसिचर गन बिधि बिपिन उजारा ॥

(श्रीरामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड- ३३)

हनुमानजी ने उत्तर दिया कि यह सब काम मैंने कहाँ किया, मैं तो शाखामृग (बन्दर) हूँ | बन्दर में केवल इतनी ही ताकत होती है –

साखामृग के बड़ि मनुसाई ।
साखा तें साखा पर जाई ॥

(श्रीरामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड-३३)

वह एक डाल से दूसरी डाल पर चला जाता है | आप कहते हैं कि ये सब कार्य मैंने किया परन्तु -

सो सब तव प्रताप रघुराई | नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ||

(श्रीरामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड ३३)

मुझमें क्या सामर्थ्य है, मैं तो एक डाल से दूसरी डाल पर जाने वाला बन्दर हूँ, वस्तुतः यह सब तो केवल आपका ही प्रताप है –

ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकुल ।
तब प्रभावँ बड़वानलहिं जारि सकइ खलु तूल ॥

(श्रीरामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड ३३)

इसको भक्त कहते हैं | जहाँ मुख से यह शब्द निकला – 'हाँ, यह कार्य मैंने किया तो उसमें कर्तृत्त्व है | कर्तृत्त्व है तो 'अहं' है और 'अहं' है तो भगवान् दूर हैं | श्रीबाबा महाराज अपना अनुभवात्मक विचार बताते हुए कहते हैं कि ब्रज में पचास वर्षों से पर्वतों को बचाने की लड़ाई हो रही थी और उसमें मैं सफल नहीं हो रहा था | ब्रजयात्रा के समय मैंने सोचा कि सभी यात्रियों की सहायता ली जाए | जब कामवन में यात्रा पहुँची तो वहाँ घोषणा की गयी कि आज बाबाश्री 'आमरण-अनशन' पर बैठेंगे | यह घोषणा सुनकर सैकड़ों यात्री भी 'आमरण-अनशन' पर बैठ गये | छोटी-छोटी बच्चियाँ भी अनशन पर बैठ गयीं | एक ऐसा चमत्कार हुआ कि पहाड़ों को बचाने की जो लड़ाई हम पचास वर्षों से लड़ रहे थे, उसे कामां में बारह घन्टों में ही जीत लिया | ऐसा क्यों हुआ ? ऐसा इसीलिए हुआ कि अनशन करने वाले जितने भी थे उनमें 'अहं' नहीं था | पहले से प्रचार नहीं किया गया था कि इतने आदमी अनशन पर बैठेंगे | केवल भगवान् का आश्रय था, छोटे-छोटे बच्चे जो अनशन पर बैठे, उनमें क्या अहं हो सकता है ? जब मनुष्य 'अहं' को पूर्णतया छोड़ देता है तब काम बन जाता है क्योंकि उस कार्य को भगवान् करते हैं |

क्रमशः

भगवान् ने कहा -अर्जुन! जिस व्यक्ति के पाप खत्म हो गए हैं पुण्य कर्म करते करते, वह दृढ़व्रत से मेरा भजन करता है|

तपस्या, ब्रह्मचर्य, शम-दम, त्याग, शौच, यम-नियम आदि साधनों से भी अन्तःकरण की वैसी शुद्धि नहीं होती, जैसी सेवा से हो जाती है।

संकीर्तन का शुद्ध स्वरूप

श्रीबाबा महाराज द्वारा वर्णित 'शिक्षाष्टक' (२४, २५/१/२००६) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी नवीनाश्री जी, मानमन्दिर, बरसाना

गतांक से आगे -

पृथ्वी माता जानती हैं –

भूतैराक्रम्यमाणोऽपि धीरो दैववशानुगैः ।
तद् विद्वान्न चलेन्मार्गाद् अन्वशिक्षं क्षितेर्व्रतम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी ११/७/३७)

ये सब जितने भी प्राणी क्रोध कर रहे हैं, मार-पीट रहे हैं, ऐसा ये दैववश कर रहे हैं | दैव का अर्थ है - प्रारब्ध-भोग | विवेकी व्यक्ति को इस बात का बोध रहता है कि हमने कभी (इस जन्म अथवा पूर्व जन्म में) अमुक प्राणी का अहित किया था, उस अहित को अब हमें इस रूप में भोगना पड़ रहा है इसलिए वह अपना अहित करने वाले लोगों द्वारा किये जाने वाले अपमान अथवा अन्य कष्टदायक दुर्व्यवहार को सह लेता है और बस इतने से ही उसको भक्ति मिल जाती है, वह अपने मार्ग से विचलित नहीं होता है, अपनी समता नहीं छोड़ता है, मन में परम शान्ति बनी रहती है; दत्तात्रेय जी ने यह गुण पृथ्वी माता से सीखा | श्रीचैतन्य महाप्रभु जी ने भी यही शिक्षा दी – कीर्तन करने चले हो तो **"तरोरपि सहिष्णुना"** अर्थात् वृक्ष से भी ज्यादा सहनशील बन जाओगे तब कीर्तन का फल मिलेगा, नहीं तो झांझ कूटते रहो | हम कीर्तन कर रहे हैं और लड़ाई भी करते जा रहे हैं, एक झांझ हमने तुम्हारी खोपड़ी पर मारा, दूसरा झांझ तुमने हमारी खोपड़ी पर मारा | किसी ने पूछा कि ये क्या हो रहा है तो जवाब दिया – 'कीर्तन हो रहा है और क्या हो रहा है ?' वस्तुतः इस तरह कीर्तन नहीं किया जाता है | इस प्रकार से लड़ने-झगड़ने पर कभी भी कीर्तन का फल नहीं मिलेगा | तीन कारणों से इस संसार को भवमहादावाग्नि बताया गया है अर्थात् पहला कारण तो ये है कि यहाँ पारस्परिक वासनाओं के संघर्ष से आग पैदा होती है | यह देवरानी-जेठानी वाली लड़ाई नहीं है | हमारे अन्तःकरण में हमारी ही वासनाओं के संघर्ष से आग पैदा होती है | दूसरा व्यक्ति तो केवल फल का वाहक होता है | इसे इस तरह से समझिये कि हम साधु ब्रज में भिक्षा मांगने किसी घर में गए और ब्रजवासी ने कहा- "मोढ़ा ! तू बड़ो चें-चें करे है |" इस तरह से ब्रजवासी प्रायः फटकार दिया करते हैं | श्रीबाबा महाराज अपना उदाहरण देते हुए कहते हैं कि एक बार मैं कथा कहने मानमन्दिर से नीचे गह्वरवन में जा रहा था, इतने में ही कुछ गोपियाँ आकर के मेरे चरण स्पर्श करने लगीं | उसी समय २-३ ब्रजवासियों ने मुझे टेढ़ी नजर से देखकर के कहा- "पामन ने छिवाय रह्यो है गोपिन ते |" इस तरह के कटु वचनों को सुनकर हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि अमुक व्यक्ति हमारा शत्रु है बल्कि यह सोचना चाहिए कि यह व्यक्ति हमारे कर्म के फल का वाहक है | शास्त्रों में शत्रुओं को कर्मफल का वाहक कहा गया है | 'कर्म-वाहक' क्या है, इसे समझिये | आपने सब्जी मंडी में दो मन वजन आलू खरीदे और रिक्शे वाले से कहा – भाई ! इसमें ये आलू भरके हमारे घर पहुँचा दो | उसने घर आकर रिक्शे से आलू उतारे, उसमें दो-चार आलू सड़े निकले तो आप उसे फटकारने लगे – "अरे, सड़े आलू कहाँ से लाया, अभी तेरी पिटाई करता हूँ |" ऐसा कहकर आप उसे मारने लग गए, देखा जाए तो रिक्शे वाले का क्या दोष है ? वह तो आपके कर्मफल का वाहक है, जो आलू आपने खरीदकर उसके रिक्शे में लाद दिया, उन्हें ही उसने आकर आपके घर पर पटक दिया | अतः रिक्शा वाला मूर्ख नहीं है, मूर्ख तो तुम हो जो कर्मफलवाहक को दोषी समझ रहे हो | यदि कोई हमें गाली देता है तो वह मूर्ख नहीं है, मूर्ख तो हम हैं जो हमारे कर्मफल के वाहक उस गाली देने वाले से अथवा रिक्शे वाले से हम लड़ते हैं | दत्तात्रेयजी ने पृथ्वी से यही शिक्षा ली | संसार के प्राणी क्रोधवश हमारे साथ जो दुर्व्यवहार करते हैं, इसके पीछे दैव है | अतः बुद्धिमान व्यक्ति समझ लेता है कि हमें दुःख देने वाला व्यक्ति

तो वास्तव में हमारा कर्मफलवाहक है और हम जैसे मूर्ख लोग कर्मफलवाहक अर्थात् पूर्वोक्त उदाहरण के अनुसार रिक्शे वाले से ही लड़ने-झगड़ने लग जाते हैं कि दस आलू तू सड़े कैसे ले आया और रिक्शे वाला कहता है कि मैं क्या करूँ, जैसे आलू आपने मेरे रिक्शे पर लाद दिए, मैं तो उन्हीं को लेकर आया हूँ किन्तु हम व्यर्थ में ही उससे लड़ने लग जाते हैं | श्रीचैतन्य महाप्रभु ने संकीर्तन को **"भवमहादावाग्नि निर्वापणं"** इसलिए कहा कि एक तो इस संसार में हमारी स्वयं की वासनाओं के संघर्ष से आग लगती है, दूसरी बात यह है कि हम इस आग को बुझा नहीं सकते और तीसरा कारण है कि यह आग प्रच्छन्न है, दिखाई नहीं पड़ती है | इसके शमन हेतु एकमात्र उपाय यही है कि जैसे जंगल में भयंकर आग लग जाये और उसी समय आसमान से घोर वर्षा होवे तो जंगल की आग बुझ जाती है, उसी प्रकार भवमहादावाग्नि के शमन हेतु कृष्णगुणगान तन्मयता के साथ करना चाहिए | (कीर्तन –)

जग असार में सार रसना हरि-हरि बोल-२ ||
यह तन है एक झांझर नैया, केवल है हरिनाम खेवैया ||
कृष्ण नाम झंकार रसना हरि-हरि बोल-२ |
जग असार में .....

कीर्तन इस प्रकार करो कि प्रत्येक जीव के रोम-रोम में भगवन्नाम गूँज उठे | सर्वत्र कृष्णनाम की झंकार हो जाये | जब चैतन्यमहाप्रभु जी कीर्तन करते थे तो ४० मृदंग एक साथ बजते थे जिनकी ध्वनि से आकाश-पाताल गूँज जाते थे | मानमन्दिर में रात्रिकालीन संकीर्तन के समय कुछ बाहरी लोग आये तो उन्होंने 'डिजाम्बे' की आवाज सुनकर कहा कि इसकी आवाज से तो हमारा हार्ट फेल हो रहा है | कीर्तन में वाद्ययंत्रों की जोरदार ध्वनि इसलिए की जाती है ताकि झंकार के साथ रोम-रोम में भगवन्नाम प्रवेश कर जाये लेकिन कीर्तन में वाद्ययंत्रों की तेज आवाज सुनकर बहुत से लोगों का हार्ट फेल हो जाता है | समझ में नहीं आता कैसा हार्ट (हृदय) है, हार्ट तो वहाँ फेल होना चाहिए जहाँ बारात आती है और डीजे की ध्वनि पर गंदे-गंदे गीत गाये जाते हैं | वहाँ तो बैठकर बड़े आनन्द से सुनते हैं – '**आज मेरे यार की शादी है |**' वहाँ हार्ट फेल नहीं होता | वहाँ तो बड़ी रुचि के साथ वेश्याओं का नाच-गान देखते हैं और भक्तों के समाज में कृष्णनाम की झंकार से ऐसे लोगों का हार्ट फेल हो जाता है | **"भवमहादावाग्नि निर्वापणं"** का तात्पर्य है कि जैसे घनघोर वर्षा होने पर जंगल की आग बुझ जाती है, उसी प्रकार कृष्णगुणगान रोम-रोम से होने लग जायेगा तो आपकी भवदावाग्नि (संसार के त्रितापों की अग्नि) बुझ जाएगी | श्रीकृष्ण-संकीर्तन की महिमा के सम्बन्ध में श्रीचैतन्यमहाप्रभुजी के द्वारा रचित प्रसिद्ध श्लोक है –

चेतोदर्पणमार्जनं भवमहादावाग्निनिर्वापणम्
श्रेयःकैरवचन्द्रिकावितरणं विद्यावधूजीवनम् |
आनन्दाम्बुधिवर्द्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनम्
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसंकीर्त्तनम् ॥
(शिक्षाष्टक- १)

इस श्लोक में ४ भाग साधक पक्ष में हैं और अन्तिम ३ हिस्से सिद्ध पक्ष में हैं अर्थात् चार तो हम जैसे लोगों के लिए हैं और शेष तीन सिद्ध महापुरुषों के लिए हैं | चाहे नाम-कीर्तन हो, गुण-कीर्तन हो, धाम-कीर्तन हो, लीला- कीर्तन हो अथवा जन-कीर्तन हो, सभी कृष्ण-संकीर्तन हैं | अलग-अलग सम्प्रदायों में अलग-अलग ढंग से कीर्तन किया जाता है | हर व्यक्ति अपनी पद्धति को श्रेष्ठ बताता है, यह बात ठीक है लेकिन जब दूसरे की पद्धति को हीन कहता है तो यह बात गलत है | इस बात का श्रीबाबामहाराज समर्थन नहीं करते क्योंकि यह अपराध का मार्ग है | महाप्रभुजी ने उपरोक्त श्लोक में '**विजयते कृष्ण संकीर्तनं**' कहा है | संकीर्तन का मतलब केवल नाम-कीर्तन ही नहीं होता है | नाम, गुण, रूप, लीला, जन, धाम आदि का कीर्तन, ये सब संकीर्तन हैं | अलग-अलग सम्प्रदायों में कीर्तन की भिन्न-भिन्न मान्य पद्धतियाँ हैं | गौड़ेश्वर सम्प्रदाय में नाम-संकीर्तन की प्रधानता है, वल्लभ सम्प्रदाय में लीला-कीर्तन मुख्य है | सभी की अपनी-अपनी मान्यता है | इसी तरह से जो श्रृंगार रस के उपासक हैं, जैसे - महावाणी या स्वामी हरिदासजी की परम्परा के जो अनुयायी हैं, वे भी लाड़िली-लाल के लीला कीर्तन को लेकर चलते हैं, वे अपने को लीला रसिक कहते हैं तथा अपने को श्रेष्ठ बताते हैं, उनका विचार भी ठीक है लेकिन बेठीक (गलत) तब होता है जब अन्य कीर्तनों में अभाव किया जाए |

क्रमशः

भगवन्नाम ही भक्ति का संपोषक

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'नाम-महिमा' (२३/५/२०१०) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- व्यासाचार्या साध्वी नवलश्री जी, मानमन्दिर, बरसाना

गतांक से आगे – पाप ही द्वंद्व बन जाता है, जिसके कारण मन में घुन लग जाता है और फिर मनुष्य उदास और चिंताग्रसित हो जाता है | जब पाप नष्ट हो जाता है तो द्वंद्व भी नष्ट हो जाता है | पाप का सबसे बड़ा दंड यही है कि वह द्वंद्व पैदा करता है | श्री-हीन व्यक्ति का मन सदा द्वंद्व से युक्त रहेगा और द्वंद्व रहित चित्त सदा प्रसन्न रहता है | अपराध के कारण इन्द्र श्री-हीन हो गए, फिर वे शिवजी के पास गये, शिवजी उन्हें लेकर ब्रह्माजी के पास गये | तदुपरान्त ब्रह्माजी, शिवजी तथा इन्द्र आदि देवगण क्षीरसागर पर गये | इन्द्र के श्रीहीन होने से तीनों लोक श्री-हीन हो गये थे | राजा का दंड प्रजा को भी भोगना पड़ता है | शिव, ब्रह्मा भी भगवान् के पास क्षीरसागर इसलिये गये क्योंकि इंद्र ने अपराध किया था और उनके कारण सारे संसार को दुःखी होना पड़ा | एक कहावत है - "रंडियों का दंड मलंगों पे" | यह कहावत यहाँ चरितार्थ हुई | क्षीरसागर पहुँचकर इन देवों ने वहाँ भगवान् की स्तुति की | भगवान् ने सभी को दर्शन दिया | श्रीमद्भागवतजी के ८वें स्कन्ध में इस कथा का उल्लेख किया गया है | ब्रह्माजी ने भगवान् से कहा कि मुझे इन्द्र और त्रिलोकी के मंगल का ज्ञान नहीं है | ब्रह्माजी ने भगवान् की बहुत बड़ी स्तुति की | श्रीमद्भागवतजी में '८/५/१५' से दुर्वासाजी का शाप शुरू होता है | इस शाप के ही प्रभाव से देवगण प्राणहीन होकर गिर पड़े | ८/५/१६ में बताया गया है कि किस प्रकार दुर्वासाजी के शाप के कारण त्रिलोकी सहित इन्द्र श्रीहीन हो गये | ८-५-१८ के अनुसार सभी देवता सुमेरु पर्वत के शिखर पर स्थित ब्रह्माजी की सभा में गये और उन्हें अपनी दयनीय स्थिति के बारे में बताया | तदनन्तर ब्रह्माजी सभी देवताओं को लेकर वैकुण्ठ में श्रीभगवान् के पास पहुँचे और वहाँ उनकी बहुत बड़ी स्तुति की |८-५-२६ से लेकर ८-५-५० तक विस्तारपूर्वक स्तुति की गयी है | **'प्रसीदतां नः स महाविभूतिः'** - इस प्रकार का वाक्य इस स्तुति में बारम्बार वर्णित है | इसका अभिप्राय यही है कि महाविभूतिशाली एकमात्र भगवान् ही हैं | (८-६-१,२) में भगवान् प्रकट हुए, ब्रह्माजी एवं शंकरजी ने ही भगवान् का दर्शन किया, अन्य देवताओं की तो आँखें ही बंद हो गईं | ब्रह्माजी ने फिर भगवान् की स्तुति (८-६-८ से १५वें श्लोक तक) की तब (८-६-१८ से) भगवान् देवताओं से बोले कि असुरों के साथ मिलकर समुद्रमंथन करो | ८ वें स्कन्ध के ७ वें अध्याय से समुद्र-मंथन शुरू होता है | सर्वप्रथम समुद्रमंथन से कालकूट विष पैदा हुआ, वह ऐसा भयानक था कि चारों ओर फ़ैलने लग गया | कालकूट से पीड़ित समस्त प्रजा महादेवजी की शरण में गयी और फ़िर सबने उनकी स्तुति की | ये स्तुति ८/७/२१ से शुरु होती है और ३५ वें श्लोक पर इसका समापन होता है | अन्त में उस भयानक कालकूट विष को भगवान् शिव ने पी लिया | उसी सम्पूर्ण कथा को एक चौपाई में तुलसीदासजी ने कहा है –

नाम प्रभाउ जान सिव नीको।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को॥

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड- १९)

शंकरजी के लिए कालकूट विष भी अमृत बन गया | देवासुर संग्राम की सारी कथा गोस्वामी तुलसीदासजी ने एक चौपाई में प्रस्तुत की है | महादेवजी नाम का प्रभाव जानते थे और हम लोग नहीं जानते हैं | इस विषय पर भक्तमाल में एक कथा उल्लिखित है - एक बार भगवान् से नारदजी ने कहा कि अपने किसी विशेष भक्त का दर्शन कराइए तो भगवान् ने उनसे कहा कि श्वेतद्वीप चले जाओ, वहाँ तुम्हें मेरे विशेष भक्त का दर्शन होगा | नारदजी तथा भगवान् श्वेतद्वीप में पहुँच गये | श्वेतद्वीप में प्रवेश करते ही

हम लोग ठग विद्या से भगवान् को नहीं पा सकते ;ढोंग-पाखण्ड नहीं चलता वहाँ |

वहाँ उनको एक बहुत बड़ा सरोवर दिखाई पड़ा | सरोवर के समीपस्थ वृक्ष पर एक पक्षी बैठा था, भगवान् ने कहा - 'देखो, ये पक्षी यहीं सरोवर के पास रहता है लेकिन इसको अनेक युग हो गये हैं, प्यासा है परन्तु जल नहीं पीता है |' (यह बड़ी विचित्र कथा है |) भगवान् बोले कि जल तो नीचे ही (सरोवर में) है, अमृत से अधिक मीठा है लेकिन यह पक्षी जल के ऊपर बैठा है फिर भी जल नहीं पी रहा है |" नारदजी – "क्यों नहीं पी रहा है ?" भगवान् - "इसलिए नहीं पी रहा है क्योंकि भगवन्नाम के बिना यह जीवित नहीं रह सकता है | तुम इसकी जगह नाम लो तो यह सुनते-सुनते अपनी प्यास बुझा लेगा |" जब नारदजी ने भगवन्नाम लेना शुरू किया, तभी उस दिव्य पक्षी ने जल पिया; इसको कहते हैं - नामनिष्ठा | गोस्वामी तुलसीदासजी ने चित्रकूट में '९ करोड़ राम नाम' के ९ अनुष्ठान किये थे | शिवजी की नामनिष्ठा के बारे में लिखा है कि वे नित्य-निरंतर भगवन्नाम लेते हैं –

सहस नाम सम सुनि सिव बानी |
जपि जेई पिय संग भवानी ||

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड- १९)

पिय संग का अभिप्राय है कि दंपत्ति शिव-पार्वती अखंड नाम-स्मरण करते हैं | (श्रीबाबा महाराज स्वयं का अनुभव बताते हैं) मुझे जो अखण्ड ब्रजवास मिला, उसके पीछे अखण्ड कीर्तन भी एक कारण है | बाबाश्री के शब्दों में – "अपनी जन्मभूमि प्रयाग में एक बार अखंड कीर्तन हम लोगों ने किया था | वैसा कीर्तन आज तक हम भूल ही नहीं सकते, उस समय संकीर्तन में सहयोग करने वाले हमारे समस्त साथी अब परलोक सिधार चुके हैं | उस समय मेरी अल्पायु थी | कीर्तन के लिए हम लोग एक धर्मशाला में रुके थे | उसमें एक हॉल था | उस हॉल में कीर्तन के लिए दस-पंद्रह से अधिक व्यक्ति नहीं थे | हॉल के सामने बगल में ही भोजनालय था और ऐसा रसमय अखण्ड कीर्तन होता था कि भोजनालय में भोजन करते हुए, स्नान करते, शरीर की कोई भी क्रिया करते, हर समय कीर्तन की मंगलमयी ध्वनि सुनाई पड़ती थी | कीर्तन हॉल में सभी भक्त अनवरत कीर्तन में ही तन्मय रहते थे, नींद आने पर उसी हॉल में थोड़ी देर के लिए सो जाते और जागने पर पुनः कीर्तन करने लगते थे | सभी भक्तों ने तदाकार होकर एक महीने तक चौबीस घंटे ऐसा कीर्तन किया था कि जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता | मानमन्दिर द्वारा संचालित राधारानी ब्रजयात्रा में भी चालीस दिनों तक अखण्ड कीर्तन की ऐसी रसमयी धारा प्रवाहित होती है कि यात्रा समाप्त होने के बाद भी सैकड़ों लोग अपने पत्रों द्वारा सूचित करते हैं कि हमारे कानों में अभी तक राधारानी ब्रजयात्रा की कीर्तन ध्वनि गूँज रही है | अन्य भी बहुत से यात्रियों की चिट्ठी आती है, जिसमें वे लिखते हैं कि हमें सपने में दिखाई पड़ता है कि यात्रा चल रही है और कीर्तन की रसमयी ध्वनि दूर-दूर तक गूँज रही है | प्रयाग में एक महीने तक अखण्ड कीर्तन के उस दिव्य अनुष्ठान के बाद ही मुझे अखण्ड ब्रजवास की दुर्लभ उपलब्धि हुई |"

नाम-महिमा से सम्बंधित आगे १९ वें दोहे में गोस्वामीजी कहते हैं –

बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास |
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ||

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड- १९)

'शाली' नाम का एक चावल होता है, वर्षा ऋतु के सावन-भादों के माह में जब तक पानी की झड़ी नहीं लगती अर्थात् लगातार पानी नहीं बरसता तब तक यह चावल नहीं उत्पन्न होता है | वैद्यक शास्त्रों के अनुसार पाँच प्रकार के प्रमुख धानों में यह शाली धान होता है | इसको 'जड़हन' व 'बासमती' भी कहते हैं, ज्येष्ठ मास में इसको बोया जाता है और पुनः इसको उखाड़ कर के सावन में आरोपा जाता है फिर यह दो महीने लगातार वर्षा में बढ़ता है | मार्गशीर्ष (अगहन) के अंत और पौष के आरम्भ में यह पकता है, इसे सबसे उत्तम धान माना गया है | गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि 'तुलसी' का पौधा और 'शाली' नामक धान वर्षा में बढ़ते हैं | भगवान् का 'राम' नाम तो सावन-भादों का महीना है और वर्षा ऋतु है - भक्ति | यद्यपि वर्षा के चार महीने – सावन, भादों, क्वार और कार्तिक को चौमासा बोला जाता है लेकिन सावन-भादों में ही विशेष वर्षा होती है | भगवान् की नौ प्रकार की भक्ति (नवधा भक्ति) चौमासा है किन्तु भगवन्नाम सावन-भादों है | जितने भी प्रकार की भक्तियाँ हैं, वे सब भगवान् के नाम से ही पुष्ट होती हैं |

क्रमशः

भोग से भव-बंधन

श्रीबाबामहाराज के ब्रजयात्रा-सत्संग (२९ अक्टूबर २०१८, पड़ाव 'कामवन') से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी मधुप्रिया जी, मानमन्दिर, बरसाना

गतांक से आगे – गृहस्थ जीवन में भोगपरायण रहने से गधे की तरह बन जाओगे, विषय-भोग हमको गधा बना देगा | इसीलिए भागवत में भगवान् कृष्ण ने इस प्रसंग को बारम्बार कहा है | एकादश स्कंध में उद्धव से कहा है –

यद् घ्राणभक्षो विहितः सुरायास्तथा पशोरालभनं न हिंसा ।
एवं व्यवायः प्रजया न रत्याइमं विशुद्धं न विदुः स्वधर्मम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी ११/५/१३)

विवाह का लक्ष्य है कि हम गृहव्रती न बनें | गृहव्रती का अर्थ है कि मैथुन परायण न बनें | मैथुन को छोड़ो, तेजस्वी बनो, भक्त बनो, सच्चे भक्त बनो | इससे तुम्हारा तेज बढ़ेगा, प्रभाव बढ़ेगा घर में, समाज में, सभी जगह | ईशता बढ़ेगी | इसलिए यहाँ यात्रा के अंतिम दिन हमें यह सोचना चाहिए कि भगवान् ने जो-जो शिक्षायें दी हैं, प्रह्लाद जी ने दी हैं, जड़भरत जी ने दी हैं, ध्रुव जी ने दी हैं, उनका हम पालन करें | ध्रुव जी ने भी कहा है कि हम लोगों को निरंतर भोग में नहीं डूबना चाहिए | अजामिल के प्रसंग में धर्मराज ने भी अपने दूतों से कहा है –

कृष्णाङ्घ्रिपद्ममधुलिण् न पुनर्विसृष्टमायागुणेषु रमते वृजिनावहेषु |
अन्यस्तु कामहत आत्मरजः प्रमार्ष्टुमीहेत कर्म यत एव रजः पुनः स्यात् |

(श्रीमद्भागवतजी ६ /३/३३)

नरक में कृष्णभक्तों को मत लाना | कृष्ण भक्तों के स्थान से दूर से निकल जाना | भगवान् कृष्ण के भक्त सच्चे भक्त होते हैं | हे दूतो ! भगवान् कृष्ण का भक्त बड़ा संयमी होता है | जिन भोगों को उसने छोड़ दिया, उनमें पुनः रमण नहीं करता है | यदि भोगों को नहीं छोड़ोगे तो कष्ट अथवाविपत्ति अवश्य आयेगी | प्रायः जो लोग नहीं छोड़ते हैं, वे भोगों को छोड़ने के लिए यज्ञादि अनेक साधन करते हैं, उससे उन्हें फिर से रजोगुण प्राप्त होता है | रजोगुण को छुड़ाने वाली केवल कृष्णभक्ति ही है | ब्रह्माजी ने जब सृष्टि की रचना की तो भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा- हे ऋषे ! यहाँ भगवान् ने ब्रह्मा जी को ऋषि कहा है | भगवान् बोले- हे ऋषे ! तुमको रजोगुण छू नहीं सकता क्योंकि तुम्हारा मन मुझमें लगा है और जिनका मन मुझमें लगा हुआ है, वह भोगी नहीं होता है | ब्रह्मा जी ने स्वयं कहा है –

न भारती मेऽङ्ग मृषोपलक्ष्यते न वै क्वचिन्मे मनसो मृषा गतिः ।
न मे <u>हृषीकाणि</u> पतन्त्यसत्पथे यन्मे <u>हृदौत्कण्ठ्यव</u>ता धृतो हरिः ॥

(श्रीमद्भागवतजी २/६/३३)

मेरी इन्द्रियाँ प्राकृत विषयों की ओर नहीं जाती हैं क्योंकि मेरे हृदय में उत्कंठा है, केवल कृष्ण की उत्कंठा है इसलिए मेरा मन कभी भी संसार के बाह्य विषयों में नहीं जाता है, मेरी इन्द्रियाँ भी कभी इन अनात्म विषयों की ओर नहीं जाती हैं | मेरी वाणी कृष्ण नाम को छोड़कर कभी भी मिथ्या वाणी नहीं बोलती है | ब्रह्मा जी ने (सृष्टि रचना के बाद) सबसे पहले यही शिक्षा दिया और व्यवहारिक रूप से इसे करके दिखाया | ऐसी शिक्षाओं को यदि आप बार-बार नहीं सुनोगे तो कथा श्रवण का यथार्थ लाभ नहीं मिलेगा और ऐसी बातों को सुनने का अवसर अन्यत्र नहीं मिलेगा क्योंकि आजकल के कथा वक्ता अति महत्वपूर्ण सार बातों को छोड़ देते हैं | सार बातों को कहने में वे घबराते हैं, उन्हें लज्जा आती है | लज्जा की कोई बात नहीं है, वस्तुतः (भक्ति के ऊँचे महल तक चढ़ने की) पहली सीढ़ी तो यही है | ब्रह्मा जी ने दो बार सृष्टि की है और इसी बात को उन्होंने फिर से कहा –

तस्मै नमो भगवते वासुदेवाय धीमहि ।
यन्मायया दुर्जयया मां ब्रुवन्ति जगद्गुरुम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी २/५/१२)

मुझको लोग जगद्गुरु कहते हैं किन्तु मैं जगद्गुरु कहाँ से हो जाऊँगा, जगद्गुरु तो भगवान् श्रीकृष्ण हैं | इसको कहते हैं दैन्य | सारे संसार की रचना करने वाला ब्रह्मा सम्मान से घबराता है, जबकि हम जैसे लोग पदवी के भूखे हैं क्योंकि हम लोग भक्त नहीं हैं | ये सारी बातें अपने मन में धारण करो और सच्चे भक्त बनो | ब्रजभूमि में एक संकल्प करके जाओ कि हम मैथुनीव्रती नहीं बनेंगे जैसे कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है – "**अब लौं नसानी अब न नसैहों |**" अब तक तो मेरा विनाश हुआ परन्तु अब आगे विनाश नहीं होगा | "**राम कृपा भव निसा सिरानी जागे पुनि न डसैहों ||**" अब तक तो मैं मोह की निद्रा में सोता रहा परन्तु अब पुनः नहीं सोऊंगा | आपकी सेवा हेतु यही बात कहने के लिए मैं (यात्रा के अंतिम दिन) आया हूँ, उपदेश करने के दृष्टिकोण से नहीं आया | जो सार बात थी, उसे मैंने खोलकर समझाया | जो लोग विरक्त हैं, वे भी भोग से दूर रहें और जो विरक्त नहीं हैं, वे भी भोग से दूर रहें | कृष्ण नाम लेने वाला भोगी कभी नहीं होगा | जब अजामिल के प्रसंग में यमराज ने अपने दूतों को कृष्णभक्तों की महिमा बताकर उनसे दूर रहने की आज्ञा दी तो अपने स्वामी की बात सुनकर यमदूतों को बड़ा विस्मय हुआ कि कृष्णभक्त में इतनी शक्ति आ जाती है, बड़ा आश्चर्य है और उन्होंने बार-बार इस बात को कहा | हमारे कहने का सार यही है कि सब लोग भोग से बचो, चाहे जवान हो, चाहे बूढ़ा हो, चाहे गृहस्थ हो अथवा विरक्त हो | ध्रुव जी ने छत्तीस हजार वर्ष तक पृथ्वी मंडल पर राज्य किया, कैसे किया –

षट्त्रिंशद्वर्षसाहस्रं शशास क्षितिमण्डलम् |
भोगैः पुण्यक्षयं कुर्वन्नभोगैरशुभक्षयम् ||

(श्रीमद्भागवतजी ४/१२/१३)

भोगों से पुण्य का क्षय हो जाता है, अतः ध्रुव जी ने भोगों का त्याग कर दिया | भोग के त्याग से अशुभ नष्ट हो जाते हैं | राजा होने के बाद भी ध्रुव जी ने भोग नहीं भोगा | इसका परिणाम क्या हुआ?

तदोत्तानपदः पुत्रो ददर्शान्तकमागतम् |
मृत्योर्मूर्ध्नि पदं दत्त्वा आरुरोहाद्भुतं गृहम् ||

(श्रीमद्भागवतजी ४/१२/३०)

जब ध्रुव जी को भगवान् की इच्छा से इस संसार से जाने का समय हुआ तो उनके सामने हाथ जोड़कर मूर्तिमान काल आया और उनसे बोला- महाराज ! अब भगवान् की इच्छा हो गयी है अतः आप उनके धाम में जायेंगे | भगवान् का यह नियम है कि जो इस संसार से जाता है, वह मेरा स्पर्श करता है यानि मेरे आधीन होकर जाता है | आप तो भगवान् के भक्त हैं अतः मैं आपसे यह नहीं कह सकता कि आपको भी मेरे आधीन होकर जाना होगा परन्तु आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरा स्पर्श कर लीजिये, इससे भगवान् के नियम का भी पालन हो जायेगा | मैं भला आपको कैसे छू सकता हूँ | अंत में ध्रुवजी ने काल के सिर पर अपना पाँव रखा | काल की हिम्मत नहीं है कि कृष्णभक्त को छू ले परन्तु होना चाहिए सच्चा कृष्णभक्त | काल की क्या हिम्मत है, यदि तुम सच्चे कृष्णभक्त हो तो काल तुम्हारे सामने मूर्तिमान होकर आयेगा और प्रार्थना करेगा | ध्रुवजी ने मृत्यु के सिर पर पाँव रखा और फिर विष्णुदूतों द्वारा लाये विमान पर चढ़ गये | जब ध्रुवजी की चर्चा चली है तो उनकी माँ की चर्चा करना भी आवश्यक है | ध्रुवजी जब विमान पर आरूढ़ होकर चले तो उन्होंने सोचा कि मेरी माँ कहाँ हैं, जिसने बचपन में मुझसे कहा था –

मामङ्गलं तात परेषु मंस्था
भुङ्क्ते जनो यत्परदुःखदस्तत् || (श्रीमद्भागवतजी ४/८/१७)
तमेव वत्साश्रय भृत्यवत्सलं मुमुक्षुभिर्मृग्यपदाब्जपद्धतिम् |
अनन्यभावे निजधर्मभावितेमनस्यवस्थाप्य भजस्व पूरुषम् ||

(श्रीमद्भागवतजी ४/८/२२)

यदि तू मेरा बेटा है तो जा उस प्रभु की शरण में जो बड़े भक्तवत्सल हैं, सेवकों पर दया करने वाले हैं, मुमुक्षुजन उन्हीं को ढूँढ़ा करते हैं |इसलिए जब भोग को छोड़ोगे तो तुम्हारा कल्याण तो होगा ही, साथ ही साथ तुम्हारे माता-पिता का भी कल्याण होगा, माता-पिता ही नहीं तुम्हारी २१ पीढ़ियों का कल्याण होगा |

क्रमशः

मानमन्दिर बरसाना

सर्वात्मसमर्पण का संकेत 'सुदैन्य'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'गोपी गीत' (३/११/१९९५) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी वत्सला जी, मानमन्दिर, बरसाना

(गतांक से आगे)

भगवान् राम कह रहे हैं – **एहि तन कर फल विषय न भाई। स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई॥**

(श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड- ४४)

सत्य बात है कि इस तन (शरीर) का फल विषय नहीं है | इसलिए कूरेश जी ने कहा – **क्वाहं कृतघ्नः पापिष्ठो दुर्मनाः परवञ्चकः | क्वासौ लक्ष्मीः जगन्माता ब्रह्मरुद्रादि वन्दिता ||** मैं कृतघ्न हूँ | जो कृतघ्न है, वह महापापी है | **"दुर्मनाः परवञ्चकः"** अर्थात् दुष्ट मन वाला और दूसरे को ठगने वाला | जब तुम्हारे अंदर भोग की इच्छा आ जायेगी तो तुम दूसरों को ठगोगे | हर व्यक्ति भोग की इच्छा के कारण दूसरों को ठगता है | देख लो, अगर लड़का-लड़की के मन में सिनेमा देखने की इच्छा है तो अनेकों बातें बनायेंगे कि वहाँ पर जाना है, यह करना है, वह करना है | सच्ची बात कोई नहीं कहता | स्त्री को विषय की इच्छा है तो इसके बारे में पुरुष से स्पष्ट रूप से कभी नहीं कह सकती | इसलिए भोगेच्छा होने पर स्त्री-पुरुष दोनों एक-दूसरे को ठगते हैं | भोग ऐसी चीज बना दिया गया है कि बिना वंचना के भोग नहीं हो सकता, चाहे कितना भी ऊँचा बुद्धिमान पुरुष है या बुद्धिमती स्त्री है | अस्तु, कूरेशजी बोले कि मैं कितना कृतघ्न हूँ | (ज्ञान हो जाने पर ही ऐसी सच्ची बात हृदय से निकलती है |) भक्त कहता है कि मैं कृतघ्न इसलिए हूँ क्योंकि आँखें दी गयीं थीं उनका (भगवान् का) रूप देखने के लिए लेकिन मैं मल-मूत्र का रूप देखने लग गया | जिह्वा (रसना) दी गयी थी भगवान् के नाम के लिए और उस जीभ से व्यर्थ की बातें, लड़ाई-झगड़ा आदमी करता है | यह कृतघ्नता है | कान दिये गये थे भगवद्-कथा सुनने के लिए लेकिन मनुष्य संसारी बातें सुनता रहता है कि वहाँ क्या हुआ, वहाँ क्या होगा, यहाँ क्या होगा | हाथ दिये गये थे सेवा के लिए, पाँव दिये गये थे भगवद्धाम में चलने के लिए | भोग क्या है ? यह शुद्ध कृतघ्नता है | कुछ लोग ऐसा तर्क करते हैं कि गृहस्थ में भोग की अनुमति है | वस्तुतः शास्त्र में भोगकाल में विषय के आस्वादन की अनुमति नहीं दी गयी है | भगवान् ने भागवत के एकादश स्कन्ध में स्पष्ट कहा है, स्वयं भगवान् की वाणी है –

यद् घ्राणभक्षो विहितः सुरायास्तथा पशोरालभनं न हिंसा।
एवं व्यवायः प्रजया न रत्या इमं विशुद्धं न विदुः स्वधर्मम्॥

(श्रीमद्भावतजी११/५/१३)

सम्भोग का उद्देश्य केवल सन्तान उत्पत्ति करना है | **'न रत्या'-** आनंद लेने (enjoy करने) के लिए सम्भोग नहीं किया जाता | भगवान् ने हम सभी के लिए यह स्पष्ट निर्णय कर दिया है | हम लोग अपनी इन्द्रियों से जो विषयों का आनंद लेते हैं, वह गलत है | इस 'विशुद्ध धर्म' को लोग नहीं जानते हैं, न जानने के कारण वे विषयों में प्रीति कर लेते हैं और भगवान् से विमुख हो जाते हैं | अतः यह ज्ञान की बात है जैसा कि कूरेश स्वामी ने कहा - **क्वाहं कृतघ्नः.....|** "कहाँ तो जगन्माता लक्ष्मीजी, जिनकी ब्रह्मा-शंकरादि भी स्तुति करते हैं फिर मैं एक तुच्छ जीव कैसे उनके सामने खड़ा होऊँ ? इसलिए मैं नहीं जाऊँगा |" यह दीनता का भाव है | अब भक्तों के भाव को कोई क्या समझेगा ? कूरेश जी के अंदर इतनी दीनता थी कि मैं लक्ष्मी जी के सामने कैसे खड़ा होऊँगा, किस मुख से खड़ा होऊँगा ? अनादिकाल से हम लोग भगवान् से

विमुख रहे; इसीलिए तो भगवान् से मिल नहीं पाये | विषयों में लीन रहे, पाप करते रहे, बहिर्मुख बने रहे | अगर सही रास्ते पर होते तो आज तक भगवान् मिल जाते | भगवान् नहीं मिले, इसका मतलब यही है कि हम लोगों ने गलत रास्ता पकड़ रखा है, ऐसी स्थिति में भगवान् कहाँ से मिल जायेंगे ? कूरेशजी सोचने लगे कि मैंने कृतघ्नता किया, पाप किया, मन खराब किया, विषय भोगों के कारण से दूसरों को ठगा | इसलिए मैं तो माता के पास नहीं जाऊँगा | यह कितनी अधिक दीनता है कि माँ के पास किस मुख से जाऊँ, किस मुँह से उनके सामने खड़ा होऊँ ? आज तक मैं माता के सामने जाने के योग्य नहीं रहा | वहाँ पर बड़े-बड़े विद्वान् उपस्थित थे, उन्होंने कूरेश जी से कहा कि आपके लिए प्रभु की आज्ञा है और प्रभु के दरबार में पतित तो जाते ही हैं | पतितों के जाने के लिए केवल एक वही जगह है क्योंकि केवल प्रभु ही पतितपावन हैं | माता का आदेश है इसलिए आप उनके पास जाइये | कूरेश जी बोले कि मैं अवश्य जाऊँगा लेकिन गुरु सरोवर में स्नान करने के बाद ही जाऊँगा | गुरुदेव में ऐसी शक्ति होती है कि वह जीव को भगवान् के सामने उपस्थित कर सकते हैं | इसलिए जब तक मैं गुरु सरोवर में स्नान नहीं करूँगा तब तक नहीं जाऊँगा | गुरु सरोवर में स्नान करने का मतलब यह नहीं कि किसी सन्त के पास गये और बोले - "महाराज ! आप हमें अपना शिष्य बना लीजिये |" शिष्य बन गये लेकिन फिर भी स्वभाव परिवर्तन में नाकामयाब रहे, वही पहले जैसे काम, क्रोध, लोभ और मोह आदि विकार ज्यों के त्यों बने रहे | बहुत से लोग गुरु दीक्षा लेने के बाद भी बीड़ी पीते हैं, सिगरेट पीते हैं,भक्षाभक्ष्य(न ग्रहण करने योग्य पदार्थ) खाते हैं, शराब पीते हैं | ऐसी गुरु दीक्षा से, इस प्रकार गुरु बनाने से क्या लाभ है ? यह तो वही बात हो गयी जैसा कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस जी में लिखा है – **"गुरु शिष अंध बधिर कै लेखा | एक न सुनहिं एक नहिं देखा ||"** किसी व्यक्ति ने ऐसा गुरु बनाया जो अन्धे थे, अब अन्धे की लठिया पकड़कर तुम पीछे से चलोगे तो अंधा तो किसी गहरे गड्ढे की ओर जा रहा है, उसके पीछे चलने से जब वो गड्ढे में गिरेगा तो तुम भी गिरोगे और मान लो यदि अँधा गुरु गड्ढे में गिर रहा है और पीछे अपने शिष्य को आवाज दे रहा है कि बेटा इधर मत आना किन्तु शिष्य है बहरा, उसे गुरु की आवाज सुनाई नहीं दे रही अतः वह गुरु के मना करने पर भी गड्ढे में गिर जाता है | गोस्वामीजी कहते हैं कि आजकल गुरु-शिष्य की ऐसी ही जोड़ी बन गयी है, ऐसी स्थिति में कल्याण कहाँ से होगा ? गुरुजी शिष्य को कोई शिक्षा दे रहे हैं कि बेटा यह कार्य करो, इस प्रकार से भजन करो किन्तु शिष्य सुन ही नहीं रहा है और यदि सुनता भी है तो उसका कान ऐसा है कि गुरु जी का उपदेश एक कान से भीतर घुसता है और दूसरे कान से बाहर निकल जाता है | जैसे किसी कमरे में आमने-सामने खिड़की लगी होती है तो हवा एक खिड़की से भीतर प्रवेश करती है और दूसरी खिड़की से बाहर निकल जाती है, यही हाल हमारे कान का है, एक तरफ से उपदेश सुनते हैं और दूसरी ओर से उपदेश बाहर निकल जाता है, नीचे उतर के हृदय में तो गुरुजी का उपदेश जाता ही नहीं है | इसीलिए गोस्वामी जी ने आजकल के शिष्य को बहरा कहा है | अस्तु, कूरेश जी ने कहा कि मैं जा रहा हूँ गुरु सरोवर में स्नान करने | वास्तव में इसे ही सच्ची गुरुभक्ति कहा जाता है | उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति लुटा दी, राज-पाट और समस्त वैभव का त्याग कर दिया, इसको कहते हैं शरणागति | क्रमशः

केवल एकमात्र भगवान् को ही सम्बन्धी मानो, भगवान् ही प्रिय हैं, भगवान् ही माँ हैं, भगवान् ही पिता हैं, भगवान् ही पति हैं, भगवान् ही सखा हैं, सब सम्बन्ध भगवान् से मान लो, भगवान् ही सब कुछ हैं |

श्रीकृष्ण-प्रेम का प्रतिरूप 'ब्रजलीला-रति'

श्रीबाबामहाराज द्वारा कथित श्रीभागवतजी (२२/२/१९८५)

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- व्यासाचार्या श्रीजी शर्मा, मानमन्दिर, बरसाना

यहाँ श्रीबाबामहाराज अपने सामने प्रत्यक्ष भई घटना को बताते हुए कह रहे हैं; बाबाश्री के शब्दों में - ये हमने अनुभव कर लियो, बिलकुल सच्ची बात कह रहे हैं, आत्मप्रशंसा के लिए नहीं कह रहे हैं, हमारे सामने एक ऐसी आँखों देखी घटना घटी, जो मानमन्दिर के समीपस्थ मानपुर गाँव की है; यहाँ पर एक रघुवीर भगतजी रहते थे, जो गह्वरवन में भजन करते थे | एक दिन उन भगतजी की हमारे पास खबर आयी कि उनकी मृत्यु होवे वारी है, उल्टी साँस चल रही है | मानपुर के प्रधान प्रकाशजी (राधाकान्त भैयाजी के पिताजी) हमसे बोले कि आपको भगतजी याद कर रहे हैं, अंतिम समय है, परसों आपको याद किया था, हम आ नहीं पाये, अब उनकी उल्टी साँस चल रही है | हमने कहा कि अच्छा चलो, कोई बात नहीं, हमसे बड़ी भूल भयी कि हम समय पर नहीं पहुँचे | वो बड़े भजनानन्दी थे, गह्वरवन में भजन करते थे | जब हम उन्हें देखने गए तो रास्ते से ही उनकी उल्टी साँस की आवाज सुनाई पड़ रही थी, न वे उठ सकें, न बोल सकें, न होश में थे; तो हम लोगों ने उनके पास जाकर के कीर्तन शुरू कियो, मानपुर के बहुत से लोग वहाँ थे | ये प्रत्यक्ष लोगों के सामने की घटना है, याय लिये हम सबके बीच में कह रहे हैं, हमारा उनके लिए कोई पक्ष नहीं था लेकिन विशेष चमत्कार व सबके अनुभव की बात तो कहनी चाहिए | उनके सामने हम लोगों ने संकीर्तन प्रारम्भ कियो, जिसमें एक पद गायो –

मदन गोपाल शरण तेरी आयो |...

'श्रीभट्ट' को प्रभु दियो अभय पद,

यम डरप्यौ जब दास कहायो ||

हमने कहा कि इस समय इनके ऊपर यमराज चढ़े भये हैं, या लिए यही पद को गानो चाहिए | यह पद घंटों तक इतनी जोर से भयो; आप लोग आश्चर्य करोगे - रघुवीर भगतजी उठके बैठ गए, जिनको होशई नहीं थो, उनको होश आ गयो और हमें हाथ के इशारे से अपने पास बुलायो और बुलायके हमारो हाथ अपने सिर पर रखवायो, क्योंकि वह बड़े श्रद्धावान भक्त थे | फिर हम चले आये और थोड़ी देर बाद उनको शरीर पूरो हो गयो | तो भगवद्गुणगान करने की महिमा केवल शास्त्र में ही लिखी भयी नहीं है, यह प्रत्यक्ष अनुभव की बात है | हम लोग भी भगवन्नामाराधन-निष्ठा पर सुदृढ़ आस्था के साथ चलें तो असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाएगा | भीष्म पितामह भी यही बात कह रहे हैं कि शरीर छोड़ते समय नाम-संकीर्तन करो | कोई भी आदमी मर रहा है, उस समय भगवन्नाम-कीर्तन करो, यह सबसे बड़ी दवाई है –

जय श्री राधे जय नन्द नंदन |

जय जय श्यामा नैनन अंजन,

जय श्री राधे जय नन्दनन्दन ||

भीष्मजी कह रहे हैं कि नाम-स्मरण करते हुए जो लोग शरीर छोड़ें तो उनकी निश्चय मुक्ति हो जाय | यहाँ तक कि पितामह भीष्म को भक्ति में अधिकार देखो कि वे अन्तिम समय में शर-शैया पर पड़े हुए कह रहे हैं कि हे श्यामसुन्दर ! आप मेरी प्रतीक्षा करें, जब तक मैं शरीर नहीं छोड़ूँ, यहीं विराजें | देखो ! कितनो अधिकार होय प्रेमीभक्त को | सूतजी बोले कि भीष्मजी ने बहुत से उपदेश किये; अब उनके जाने को समय उत्तरायणकाल आयो तो पितामह ने श्यामसुन्दर की स्तुति करी और बोले कि मैं वितृष्ण होकर के आपमें मन लगाय रह्यो हूँ | (युद्धकाल में श्यामसुन्दर के स्वरूप व स्थिति का वर्णन करते हुए कह रहे हैं) नीलवर्ण है आपको, अर्जुन के सखा हैं | मैंने जब इन पर बाण मारो तो लीलादृष्टि से इनके कवच कट गए, चुभते भये मेरे बाणन के होते भये भी उनकी कृपामयी छवि, घोड़ान के टाप से उठी धूल से लिपटी भयी उनकी

अंगकान्ति, वो आज तक मुझे याद है | अर्जुन ने युद्ध में किसी को वध नहीं कियो, ये कन्हैयाजी रथ पर आगे बैठे रहते थे और अपनी दृष्टि से ही लोगन की आयु हर लेते थे | अर्जुन तो मरे-मारेन को बाण मारते थे | जिन श्यामसुन्दर ने गीता का ज्ञान दियो, मेरी प्रतिज्ञा सत्य करवे के लिए अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी और उनकी वो छटा मुझे याद आवे है - जब वह रथ से कूदे हैं, वा समय उनको दुपट्टा (पीताम्बर) छूट रह्यो हो |

"वा पट पीत की फहरान |" (श्रीसूरदासजी)

दुपट्टा फरफरा करके अलग जा रह्यो हो और मेरौ वध करवे के लिए वो चले आ रहे थे | अर्जुन ने जिन लोगों को वध कियो, उन्होंने भगवद्दर्शन करते हुए शरीर छोड़्यो और उन सबको भगवत्प्राप्ति भयी | आखिर में भीष्म पितामह ने महारास लीला को याद कियो | ब्रजलीला से कौन बच सकै, कुन्तीजी भी ब्रज की याद कर रही हैं, पितामह भी ब्रज की याद करते हुए कह रहे हैं – देखो वो ब्रजभूमि, जब श्यामसुन्दर रास में अन्तर्धान हो गए हैं तो गोपबालाएँ उनकी याद करते-करते उनके स्वरूप को प्राप्त ह्वै गईं | राजसूय यज्ञ में भी जिन्होंने प्रथम पूजा प्राप्त की, उन श्यामसुन्दर को मैं भेदरहित होकर के ध्यान कर रह्यो हूँ, वे सबके हृदय में स्थित हैं; ऐसे कृष्ण-रूप को ध्यान करते भये पितामह ने स्वाँस छोड़ दियो | आकाश में नगाड़े बजवे लग गए, फूलन की वर्षा होवे लग गयी | सब मुनि लोग श्यामसुन्दर को अपने हृदय में धारण करके अपने आश्रमन को लौट गये | इधर पाण्डव लोग सारी पृथ्वी पर विजय करके राज्य को प्राप्त कर लिए किन्तु युधिष्ठिरजी के बारे में लिख्यो है कि उन्होंने राज्य प्राप्त करवे के बाद भी भोग नहीं भोगे, शासन जरूर कियो | उनके शासन में बड़ो सुख हो, अच्छी वर्षा होती, चारों ओर सुख-समृद्धि की संवृद्धि हो | श्यामसुन्दर कछू दिन उनके पास रहे और अंत में चलवे लग गये | जब विदाई को समय आयो तो जितनी स्त्रियाँ थीं, उनको हृदय प्रेम से भर आयो परन्तु अपने-अपने आँसुअन् को उन्होंने रोक लियो कि अमंगल नहीं होनो चाहिए | देखो - 'प्रेम' याई ते कहें कि चलते समय आँसू क्यों बहावें, अपने श्यामसुन्दर को हँसते भये मुख से विदा करें | (लेकिन हम जैसे लोग आँसू पहले दिखायेंगे, प्रेम को प्रदर्शन करेंगे |) विदाई के समय स्वयं अर्जुन ने कृष्ण के छत्र को दंड धारण कियो; उद्धव, सात्यकि ने बीजना लिए | जब श्रीकृष्ण वहाँ से विदा भये तो मार्ग की स्त्रियाँ आपस में कृष्ण-चर्चा कर रही हैं | (आचार्य लोग लिखें कि ये स्त्रियाँ नहीं हैं, ये श्रुतियाँ हैं | श्रुतियाँ भी अनेक प्रकार की हैं - जो रसरूपा श्रुतियाँ थीं, वे तो गोपी बनी थीं, बाकी ऐश्वर्य वाली श्रुतियाँ अलग होयें हैं, उनको ऐश्वर्य रूप की प्राप्ति होय |) तो वे रसस्वरूपा श्रुतियाँ यहाँ पर श्यामसुन्दर को देखकरके कह रहीं हैं – अरे, यही पुराणपुरुष है; सृष्टि से पहले भी जब सब शक्तियाँ सो रहीं तो याने अपनी प्रकृति को लेकर के संसार की रचना करी | (श्रुतियाँ ही तो सोते भये पुराणपुरुष को जगावें, दशम स्कंध के अंत में वेदस्तुति में ऐसो वर्णन कियो गयो है |) यही परम पुराणपुरुष है, जाने शास्त्र बनाये हैं और देखो - यही अवतार लेय है | अरे देखो ! यदुवंश भी पवित्र ह्वै गयो, द्वारिका भी पवित्र ह्वै गई | रुक्मिणी आदि रानियाँ धन्य हैं, जो इनकी अर्धांगिनी बनीं | ब्रज की गोपियाँ तो श्रीकृष्ण की याद में प्रतिक्षण विरह की अवस्था कूँ प्राप्त होकर मूर्छा आदि को प्राप्त हो रही हैं, उनको ऐसो अघटमान प्रेम है | द्वारिका की रानियों को तो निरंतर कृष्ण प्राप्त हैं, इनको प्रेम यदि बढ़ै तो कोई विशेष बात नहीं, विलक्षणता तो ब्रजबालाओं की है कि देखो, आज भी ब्रजलीला में उनको वैसो प्रेम बनो भयो है | इन पटरानियों को देखो, जा स्त्रीत्व को कलंकित, अपवित्र मानो जाय वाको इन्होंने धन्य कर दियो | या प्रकार से श्रुतिरूपा गोपियाँ कृष्ण के गुणन् को वर्णन कर रही हैं | श्यामसुन्दर के काजे अजातशत्रु युधिष्ठिर ने चतुरंगिनी सेना भेजी | द्वारका पहुँचकर के प्रभु ने शंख बजायो, शंख के शब्द से सारी प्रजा समझ गयी और आके श्यामसुन्दर की स्तुति कर रही है | क्रमशः

छोटी-छोटी इच्छाओं ने हमको अंधा बना दिया, इच्छाएँ हट जाएँ तो अभी भगवान् दिखाई पड़ेंगे |

आत्मोद्धार का उपाय

साध्वी मुरलिकाजी द्वारा कथित 'श्रीमद्भागवत-कथा'(९/१/२०१४) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी माधुरी जी, मानमन्दिर, बरसाना

गतांक से आगे - अब वे धनुर्धर स्वामी ऐसे भक्त बन गए कि अब भगवान् के अतिरिक्त कहीं संसार में उनकी दृष्टि जाती ही नहीं थी | अतः यदि दोष भी भगवान् से जुड़ जाए तो वह गुण बन जायेगा और मान लो कितना ही ऊँचे से ऊँचा गुण है यदि भगवान् से उसका सम्बन्ध न हुआ तो – **"सो सुखु करमु धरमु जरि जाऊ"** वह सब बेकार है, व्यर्थ का है | यह परमधर्म गोकर्णजी महाराज बता रहे हैं तथा इस परम धर्म में आत्मदेव ब्राह्मण परिनिष्ठ हुए हैं एवं उसके बाद आत्मदेव ब्राह्मण को भगवद्धाम (परागति) की प्राप्ति हुई है | आत्मदेव ब्राह्मण की पत्नी धुंधली (धुंधुकारी की माँ) अपने बेटे के ऊधम (उद्दण्डता) से परेशान होकर कुँए में जाकर गिर गई, वहाँ उसका प्राणान्त हो गया | मृत्यु दोनों की हुई लेकिन एक ने सत्संग से जीवन को सुधार लिया और एक सदा-सदा के लिए अन्धकार में चली गई |

जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ |
सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ ||

(रामचरितमानस-उत्तरकाण्ड-४४)

वे जन आत्महत्यारे हैं, जो मनुष्य शरीर प्राप्त करने के बाद भी अपने-आप से अपने का कल्याण तो नहीं करते और घोर (गाढ़) अन्धकार में चले जाते हैं | हमलोग आत्महत्यारे हैं | गोकर्णजी के उपदेश से आत्मदेव का कल्याण हो गया, इधर धुंधुकारी को भी वेश्याओं ने तड़फा-तड़फाकर मार दिया तथा जलते हुए अंगारे उसके शरीर पर डाल दिए | जैसे ही अंगारों से वह पीड़ित हुआ, वेश्याओं ने उसके गले में फाँसी लगायी और वह मर गया व प्रेतयोनि को प्राप्त हो गया | गोकर्णजी दयावश अपने भाई धुन्धुकारी के लिए गया में श्राद्ध करके अपने घर में आये | जब लौट के आये तो प्रेतयोनि को प्राप्त वह धुंधुकारी उनके सामने बड़े-बड़े भयानक रूप बनाने लगा | कभी भेड़ा बन जाता, कभी इन्द्र बन जाता | गोकर्णजी ने पूछा- "भैया ! तू कौन है ?" धुंधुकारी ने हाथ जोड़कर कहा - "हे करुणानिधान ! मैं अपने पापों की क्या गणना कराऊँ, बस इतना समझ लो कि अपने भयंकर पापों से प्रेत बन गया हूँ, अब ऐसा कोई उपाय करो जिससे मेरा उद्धार हो सके | कैसे उद्धार होगा ?" गोकर्णजी महाराज - "भैया ! मैं तो तेरा गयाजी में पिण्डदान कर आया फिर भी तेरा उद्धार नहीं हुआ तब तो तेरा उद्धार असंभव-सा ही है |" धुन्धुकारी - "आप तो महान पुरुष हैं, आपके लिए कुछ भी कार्य असंभव नहीं है, कृपया मेरे कल्याण का कुछ उपाय करें |" सवेरा हुआ, गोकर्णजी ने सूर्य की गति को रोककर उनसे धुंधुकारी के उद्धार का उपाय पूछा, तब सूर्यदेव ने उन्हें 'भक्तिमय ज्ञानयज्ञ' का अनुष्ठान करने के लिए प्रेरित किया | गोकर्णजी महाराज ने धुंधुकारी के कल्याण के निमित्त 'श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञानयज्ञ' का अनुष्ठान किया | जब सम्पूर्ण ग्रामवासियों को पता चला कि 'श्रीमद्भागवत-ज्ञानयज्ञ' का अनुष्ठान होने जा रहा है तो वे सभी दौड़-दौड़कर अपने-अपने पाप से निवृत्त होने की इच्छा से कथा-श्रवण के लिए वहाँ पधारे | श्रोताओं का विशाल समुदाय वहाँ एकत्रित हो गया | अब इधर गोकर्णजी ने कथा कहना प्रारम्भ किया | प्रेत धुंधुकारी वायवी रूप से सात गाँठ के एक बांस में प्रविष्ट कर गया | पहले दिन बांस की ग्रंथि भीषण शब्द करते हुए फट गयी,

दूसरे दिन दूसरी ग्रंथि फट गयी | इस प्रकार सात दिनों में कथा-श्रवण के प्रभाव से धुंधुकारी प्रेत योनि से मुक्त हो गया और भगवत्सारूप्य को प्राप्त होकर गोकर्णजी के सन्मुख प्रकट हुआ | उसका रूप साक्षात् भगवान् नारायण के समान हो गया | गोकर्ण महाराज ने उससे पूछा - "आप कौन हैं ?" वह बोला - "मैं धुंधुकारी हूँ, आपकी कृपा-करुणा से मेरा उद्धार हो गया |" धुंधुकारी को प्रेतयोनि से मुक्ति प्राप्त हो गयी | धुंधुकारी ने गोकर्णजी को प्रणाम करके बड़ा सुन्दर उपदेश दिया कि निश्चित ही यह श्रीमद्भागवत कथा भगवद्धाम प्रदान करने वाली है, प्रेत आदि योनियों से जीव को मुक्त करने वाली है –

अस्थिरस्तम्भं स्नायु बद्धं मांसशोणित लेपितम् |
चर्मावनद्धं दुर्गन्धं पात्रं मूत्रपुरीषयोः ||

(श्रीमद्भागवतमाहात्म्य ५/५८)

अरे ! इस शरीर में मनुष्य झूठे ही अभिमति कर लेता है | इस शरीर का स्वरूप तो देखो, **'अस्थिरस्तम्भम्'** - जैसे घर को बनाया जाता है तो सबसे पहले खम्भा खड़ा किया जाता है, वैसे ही इस शरीर में हड्डियों के खम्भे हैं फिर खम्भे को जैसे रस्सियों से बाँध दिया जाता है, वैसे ही तमाम नाड़ियों से इस अस्थि रूपी स्तम्भ को बाँध दिया गया है | **'मांसशोणित लेपितम्'** – खम्भे में फिर जैसे पलस्तर आदि किया जाता है, वैसे ही इस शरीर में माँस और रक्त का पलस्तर किया गया है | चमड़े से इसको ढक दिया गया है, क्यों ? क्योंकि यह शरीर है तो मल-मूत्र का पात्र (मटका) ही, इसकी जो दुर्गन्ध थी, यह देखने में जो बुरा लगता था, उसको चमड़े से ढक दिया गया | अगर चमड़े से न ढका होता तो मनुष्य का कभी भी इस शरीर में राग होता ही नहीं | जब दिनभर वह देखता कि इस शरीर में हड्डी है, माँस है, रक्त है, मल-मूत्र भरा हुआ है, यही सब दूषित चीजें भरी हुई हैं तो कभी भी इस शरीर में आसक्ति हो ही नहीं सकती थी | इसको जब चमड़े से ढक

> वहाँ शरीर छोड़ो जहाँ कोई पानी देने वाला भी नहीं हो, कोई पूछने वाला नहीं हो, कोई सेवा करने वाला नहीं हो, उसको 'अविज्ञात गति' कहते हैं |

दिया गया तो भीतर का स्वरूप तो दिखता नहीं, बस, ऊपर के गोरे-काले चमड़े पर आदमी मोहित होकर इसमें आसक्ति किये रहता है |

सुन्दर देही देखके उपजत है अनुराग |
मढ़ी न होती चाम की तो जीवत खाते काग ||

ऊपर से देखने में शरीर बड़ा सुन्दर लगता है, यदि इसे चमड़े से न मढ़ा गया होता तो आदमी को जिन्दा ही कौवा खा जाते, मरने के बाद तो क्या खाते, जिन्दा ही खा जाते लेकिन चर्म से ढक दिया गया तो कुछ दिखाई नहीं पड़ता कि शरीर के भीतर क्या है, रक्त है कि अस्थि है कि माँस है | शास्त्र व महापुरुषों की वाणी के द्वारा शरीर के भीतर की विकृतियों के बारे में सुनते हैं किन्तु सुनने का कितनी देर तक प्रभाव रहता है, केवल थोड़ी देर तक ही प्रभाव रहता है, उसके बाद पुनः हमलोग शरीर में आसक्त हो जाते हैं | शरीर की नश्वरता के बारे में धुन्धुकारी ने बताया

कृमिविड्भस्म संज्ञान्तं शरीरमिति वर्णितम् |
अस्थिरेण स्थिरं कर्म कुतोऽयं साधयेन्न हि ||(भा.माहा.५/६०)

इस शरीर के लिए आदमी जाने क्या-क्या करता है, क्या-क्या नहीं करता है विनाशी शरीर के लिए लेकिन इस असद् शरीर की जो अंतिम संज्ञा है वह तो कृमि, विड् (मल) और भस्म ही है | गाड़ दिया गया तो यह शरीर कृमि (कीड़ा) बन जाएगा, कोई पशु इसे खा गया तो विड् (मल) बन जाएगा और जला दिया गया तो राख का ढेर हो जाएगा; मरणोपरांत मात्र ये तीन ही स्थितियाँ होती हैं शरीर की, अन्य कोई चौथी स्थिति नहीं है दुनिया में, फिर भी मनुष्य इस अस्थिर शरीर (जो स्थिर रहने वाला नहीं है) की कामनाओं की पूर्ति करता रहता है, जन्म बीत गया पूर्ति करते-करते, रोज खाते हैं फिर भी तो पेट नहीं भरता |

क्रमशः

न किसी साधन का भरोसा, न किसी सगे-सम्बन्धी का भरोसा, तब श्रीकृष्ण का भरोसा मिलेगा |

अनासक्ति से सतत् संतुष्टि

श्रीबाबा महाराज के सत्संग 'श्रीमद्भगवद्गीता' (१८,१९/१/ २०१२) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी हरिप्रेमा जी, मानमन्दिर, बरसाना

गतांक से आगे - श्लोक – २७

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च |
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ||

जो पैदा हुआ है, उसकी अवश्य मृत्यु होगी और जो मर गया है, उसका निश्चय ही जन्म होगा | इसलिए यह जो नियम छोड़ा नहीं जा सकता, उसके बारे में शोक करना बेकार है |

श्लोक – २८

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत |
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ||

यह जीवात्मा पहले आदि में भी अव्यक्त था और अंत में भी अव्यक्त में लीन हो जाएगा, बीच में इसका व्यक्त रूप शरीर प्रकट हो गया है, इसलिए इस विषय में शोक नहीं करना चाहिए | हम लोग पैदा हुए हैं, पैदा होने के पहले हम कहाँ थे ? पैदा होने के पहले हम अव्यक्त में थे | ('अव्यक्त' जो प्रकट नहीं है, 'व्यक्त' माने प्रकट) उस समय हमलोगों का शरीर विचार के आधीन था कि किस योनि में जाना है, इसका फैसला यमराज को करना था | अव्यक्त (अप्रकट) से शरीर व्यक्त (प्रकट) हुआ और प्रकट होने के बाद यह दिखाई पड़ रहा है और दिखाई पड़ने के बाद मरेगा | मरने के बाद जीव कहाँ जायेंगे ? मृत्यु के बाद जीव अव्यक्त में जायेंगे | यह शरीर पहले अव्यक्त था, बीच में व्यक्त हुआ और फिर अव्यक्त में चला जाएगा | 'अव्यक्त' माने प्रकट नहीं है कि क्या बनना है, लड़का बनना है कि लड़की बनना है कि कैसा शरीर मिलेगा, इसको अव्यक्त कहते हैं | अव्यक्त से फिर व्यक्त हुआ, जीव को जैसा शरीर मिलना था, वह मिला, अच्छा-बुरा, बीमार-स्वस्थ, गरीब-अमीर - ये सब व्यक्त है, सुख-दुःख व्यक्त है और उसके बाद न सुख रहेगा, न दुःख रहेगा, न अमीर रहेगा, न गरीब रहेगा क्योंकि सब मर जाते हैं, अव्यक्त में चले जाते हैं |

अव्यक्तादीनि भूतानि – 'आदि' अर्थात् शुरू में जितने भूत (प्राणी) हैं, वे अव्यक्त में होते हैं और व्यक्तमध्यानि – बीच में वे व्यक्त हो जाते हैं | 'अव्यक्तनिधनान्' – अव्यक्त में उनकी मौत हो जाती है अर्थात् वे अव्यक्त में चले जाते हैं | 'तत्र का परिदेवना' – इसलिए ऐसी स्थिति में रोने अथवा शोक करने की क्या आवश्यकता है ? सृष्टि का एक नियम बन गया है कि सभी प्राणी पहले अव्यक्त रहते हैं, बीच में व्यक्त हो जाते हैं और उनका अन्त अव्यक्त में हो जाता है | चाहे राजा हो अथवा रानी हो – **"आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर |"** इसलिए बीच में व्यक्त के लिए रोना, शोक करना, व्यक्त से प्रेम करना, उसे अपना मानना, उससे ममता करना, स्नेह करना – ये मूर्खों का काम है | हमेशा सोचना चाहिए कि हर चीज अव्यक्त में जा रही है | हम किसी से प्रेम करते हैं तो वह भी एक दिन अव्यक्त में चला जायेगा, जिससे वैर करते हैं, वह भी अव्यक्त में चला जायेगा | हर चीज अव्यक्त में चली जाएगी | इसलिए यदि हम व्यक्त वस्तु को अपना मान लें तो यह गलत है | सारा संसार व्यक्त है और भगवान् की माया का स्वरूप है | सच्चे वैष्णव की समदृष्टि होती है, न उसके लिए मान है, न अपमान है, न सुख है, न दुःख है |

वास्तविक वैष्णव के विषय में परमभक्त श्रीनरसीजी ने कहा है –

"वैष्णव जन तो तेने कहिये, पीर पराई जाणे रे |
पर दुक्खे उपकार करे तोन, मन अभिमान न आणे रे ||
सम दृष्टि ने तृष्णा त्यागी, निंदा करे न केनी रे |"
"वाच-काछ मन निश्छल राखे, धनि-धनि जननी तेनी रे |"

समदृष्टि वाले जनों के अन्दर तृष्णा नहीं होती है, न वह किसी की निंदा करता है, न किसी को अच्छा समझता है, न बुरा समझता है, समत्व भाव में स्थित भगवत्प्रेमी होता है | बस, हम लोग केवल इतना ही कर लें कि व्यक्त

भगवान् ने गीता में कहा -अर्जुन! तू सर्वभाव से शरण में जा, तब तुझे शाश्वत शान्ति मिलेगी।

चीज को अपना मान करके लड़ना-झगड़ना बंद कर दें। कोई कहता है कि हम यहाँ बैठेंगे, दूसरा कहता है कि तू कैसे यहाँ बैठेगा, मैं तुझे नहीं बैठने दूँगा, इस प्रकार छोटी-छोटी बातों पर हम लोग लड़ते हैं तो भक्ति चली जाती है। यदि वाणी और कार्य में हम निश्छल हैं तो हमारे माता-पिता और पुरखे तक तर जायेंगे। व्यक्त चीज को अपना नहीं मानना चाहिए। 'व्यक्त' माने हम जो कहें, वह हो जाये। हमने तुमसे कहा कि यहाँ बैठो और तुम नहीं बैठे तो हम नाराज हो गए, ये क्या है, यह व्यक्त में प्रेम करना है। व्यक्त के लिए रोना, शोक करना, चिंता करना, विलाप करना – ये सब गलत है। **"अव्यक्तादीनि.....तत्र का परिदेवना"** यह एक ही श्लोक यदि हमारे जीवन में उतर आये तो जन्म भर के लिए हम माया से मुक्त हो जायेंगे। दुनिया में व्यक्त चीजों के लिए ही लड़ाई होती है। ये हमारा है, ये हमारी कॉपी-किताब है, ये हमारी कलम है, तुमने कैसे ले लिया? व्यक्त चीजों को अपना नहीं समझना चाहिए क्योंकि भगवान् ने इस श्लोक में बहुत अच्छी बात कही है कि सभी प्राणी अव्यक्त से पैदा हुए हैं और बीच में ये व्यक्त हो जाते हैं। व्यक्त प्राणियों की अव्यक्त में समाप्ति हो जाती है, यह प्रकृति का नियम है, इसलिए ऐसी स्थिति में शोक नहीं करना चाहिए, रोना नहीं चाहिए। मध्य के जो व्यक्त शरीर हैं, व्यक्त परिस्थिति हैं, व्यक्त स्थितियाँ हैं, उनमें ममता करना, आसक्ति करना, उनके प्रति शोक करना गलत है।

सभी चीजें अव्यक्त से पैदा हुई हैं, बीच में व्यक्त होती हैं और अव्यक्त में समाप्त हो जाती हैं, इसलिए उनके प्रति रोना–गाना, चिंता करना, उनको अपना समझना, ये सब व्यर्थ है। यह एक ही श्लोक यदि समझ में आ जाये तो दुनिया की सभी लड़ाइयाँ समाप्त हो जाएँगी।

चाणक्य ने लिखा है – **"बुद्धेः फलं अनाग्रहः।"** बुद्धिमान कौन है? जिसमें अनाग्रह अर्थात् हठ नहीं है। जितना भी अहं है, मेरा-तेरा, लड़ाई-झगड़ा – यह आग्रह (जो हम कहें, वह करो) के कारण होता है। 'माँ-बाप' पुत्र से कहते हैं कि जो हम कहें वही तू कर; स्त्री 'पति' से ऐसा कहती है और पति 'स्त्री' से कहता है। संसार में हर व्यक्ति आग्रह के कारण लड़ रहा है। सच्चा भक्त वही है जो मन में आग्रह (अभिमान) नहीं करता है। हम जो चाहें वही हो, हम जो कहें वही हो और ऐसा न होने पर माँ भी दुःखी होती है, पिता भी दुःखी होता है, बेटा भी दुःखी होता है और स्त्री भी दुःखी होती है। युधिष्ठिर को इसीलिए धर्मराज माना गया क्योंकि उनमें अनाग्रह था, आग्रह व हठ नहीं था; उनके जीवन में ऐसी बहुत-सी घटनाएँ हैं जो दिखाती हैं कि उनमें अनाग्रह था। इसी गुण के कारण वह जीती हुई लड़ाई तक हार गए लेकिन उन्होंने दुःख नहीं किया। बुद्धिमान वही है जिसके अंदर अनाग्रह है, हठ नहीं है कि हम जो कहें वही हो, हम जो कहें वैसा ही करो। भगवान् राम ने भी यही कहा है –

भगति पच्छ हठ नहिं सठताई। दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई॥

(श्रीरामचरितमानसजी, उत्तरकाण्ड – ४६)

जिसके अंदर हठ है, उसके अंदर भक्ति नहीं है, न है, न थी, न होगी। हठी व्यक्ति में अहं बढ़ेगा। 'चाणक्य' कहते हैं कि जिसके अन्दर आग्रह (हठ) है, उसमें बुद्धि तो है ही नहीं, वह तो मर गया। सच्चा भक्त हठ (अभिमान) नहीं करता, हम जैसे नकली लोग ही किया करते हैं। गीता का यह श्लोक भी यही समझा रहा है कि हर चीज, हर परिस्थिति, हर आदमी अव्यक्त से पैदा होते हैं। उसका आदि (शुरुआत) अव्यक्त है, बीच में व्यक्त हो जाते हैं और अन्त में सब अव्यक्त में मर जाते हैं, अतः उसके प्रति शोक करना, आसक्ति करना बेकार है। यह एक ही श्लोक यदि हमारी समझ में आ जाये तो हम लोग युधिष्ठिर बन जायेंगे, फिर जीवन भर न कभी विवाद होगा, न हठ होगा, न लड़ाई-झगड़ा होगा बल्कि समदृष्टि बनी रहेगी। यदि हम लोग अनाग्रह सीख लें तो हमारे माँ-बाप भी कृतार्थ हो जायेंगे लेकिन अनाग्रह जीवन में नहीं आता है। हम जो कहें वही होना चाहिए, चाहे कोई मर जाये या जी जाये, यह हठ है, अहं का रूप है; जो इस हठ को अपने जीवन में छोड़ देता है, वह धर्मराज बन जायेगा, युधिष्ठिर बन जायेगा, भक्त बन जायेगा लेकिन ऐसा होना बड़ा कठिन है, निरन्तर वैराग्यपूर्वक अभ्यास करने से अवश्य सम्भव हो जाता है। वह पक्का शठ (मूर्ख) है जो भक्ति करते समय भी हठ रखता है, अतः सभी कुतर्कों को छोड़कर सदा के लिए श्रीभगवान् की शरण ग्रहण कर लें। क्रमशः

Braj Baalika Shri Shri Murlika Sharma Ji
US/Canada Trip 2019

Bhagwat Katha Tour Schedule 2019

Week	Status	Venue	City/State
May 4 to May 11	Final	Mangal Mandir	Silver Spring/MD
May 12 to May 18	Final	Hindu Mandir	Atlantic City/NJ
May 19 to May 25	Final	SDK Temple	Bay Area/San Jose
May 26 to June 1	Final	Hayward Temple	Bay Area/San Jose
June 2 to June 8	Final	Krishna Valley Temple	Apple Valley/CA
June 9 to June 15	Final	Laxmi Narayan Mandir	Riverside/CA
June 16 to June 22	Final	Private Residence	Cerritos/CA
June 23 to June 29	Final	Ved Mandir	Milltown/NJ
June 30 to July 6	Final	Shri Gurusthan Temple	Rhode Island
July 7 to July 13	Final	Hindu Temple of Charlotte	Charlotte/NC
July 14 to July 20	Final	Renu Gupta Ji's home	Cincinnati/OH
July 21 to July 27	Final	Srivaani Kuchipudi Dance Academy	Atlanta/GA
July 28 to Aug 3	Final	Geeta Ashram Mandir	Minneapolis/MN
Aug 4 to Aug 10	Final	Quebec Hindu Temple	Quebec/Canada
Aug 11 to Aug 17	Final	Burnabi Hindu Temple	Vancouver/Canada
Aug 18 to Aug 24	Final	Surry Hindu Temple	Vancouver/Canada
Aug 25 to Aug 31	Final	Hindu Mandir of Columbia	Columbia/SC

SHREE JI'S BHAGWAT KATHA & KIRTAN TOUR SCHEDULE

16 May 2019 to 1 July 2019

Date	Day	Time	Host Name	Address	Prasadam/Langar	Notes
17 May	Friday	6:30pm - 8:00pm	Prem Prakash Mandal Mandir	63 Miller St, Epping 3076	Yes	
18 May	Saturday	6:30pm - 8:00pm	Prem Prakash Mandal Mandir	63 Miller St, Epping 3076	Yes	
19 May	Sunday	2:00pm - 6:00pm	Shree Ram Krishna Mandir	17 Malcolm Place, Campbellfield 3061	Yes	
20 May	Monday	7:00pm - 9:00pm	Shree Ram Krishna Mandir	17 Malcolm Place, Campbellfield 3061	Light Meal	
21 May	Tuesday	7:00pm - 9:00pm	Shree Ram Krishna Mandir	17 Malcolm Place, Campbellfield 3061	Light Meal	
22 May	Wednesday	7:00pm - 9:00pm	Shree Ram Krishna Mandir	17 Malcolm Place, Campbellfield 3061	Light Meal	
23 May	Thursday	7:00pm - 9:00pm	Shree Ram Krishna Mandir	17 Malcolm Place, Campbellfield 3061	Light Meal	
24 May	Friday	7:00pm - 9:00pm	Shree Ram Krishna Mandir	17 Malcolm Place, Campbellfield 3061	Yes	
25 May	Saturday	2:00pm - 6:00pm	Shree Ram Krishna Mandir	17 Malcolm Place, Campbellfield 3061	Yes	
26 May	Sunday	4:00pm - 7:00pm	Ajay Kumar & Sruchi 0430830329, 0410515199	14 Bursaria Drive, Caroline Springs 3023	Yes	New Home
27 May	Monday	7:00pm - 9:00pm	Kushal & Navjot Sharma	2 Wingan Place, Wollert 3750	Yes	
28 May	Tuesday	7:00pm - 9:00pm	Shree Ram Krishna Mandir	17 Malcolm Place, Campbellfield 3061	No	
29 May	Wednesday	7:00pm - 9:00pm	Asha Aunty-0469215500	23 Horseshoe Circuit, Truganina 3029	Yes	
30 May	Thursday	7:00pm - 9:00pm	**FREE**			Ekadasi
31 May	Friday	7:00pm - 9:00pm	Deepak & Poonam Bhargav	Chintpurni Temple, 191 William Street, St Albans 3021	Yes	
01 June	Saturday	4:00pm - 7:00pm	Kirtan	Address Pending		
02 June	Sunday	11:00am – 3:00pm	Chintpurni Temple	191 William Street, St Albans 3021	Yes	
03 June	Monday	7:00pm - 9:00pm	Rani Aunty-0423084796	5 Spearfelt Court, Cairnlea 3023	Yes	
04 June	Tuesday	7:00pm - 9:00pm	Shree Ram Krishna Mandir	17 Malcolm Place, Campbellfield 3061	No	
05 June	Wednesday		**FREE**			
06 June	Thursday		**FREE**			
07 June	Friday	7:00pm - 9:00pm	Ankur & Seema Sharma	1 Wingan Place, Wollert 3750	Yes	
08 June	Saturday	2:00pm - 6:00pm	Ankur & Seema Sharma	1 Wingan Place, Wollert 3750	Yes	
09 June	Sunday	2:00pm - 6:00pm	Raja & Roslyn	15 Port Patrick Court, Greenvale 3059	Yes	
10 June	Monday	2:00pm - 6:00pm	Geeta Sharma	45 Mantello Drive, Werribee 3030	Yes	Public Holiday
11 June	Tuesday	7:00pm - 9:00pm	Shree Ram Krishna Mandir	17 Malcolm Place, Campbellfield 3061	No	
12 June	Wednesday		**FREE**			
13 June	Thursday	7:00pm - 9:00pm	Dimpy	10 Regent Street, Mernda 3754	Yes	Ekadasi
14 June	Friday	7:00pm - 9:00pm	Gaurav & Neeru	92 Ribblesdale Avenue, Wyndham Vale 3024	Yes	
15 June	Saturday	6:00pm – 8:00pm	Dharmenda Ji	6 Olivetree Loop, Craigieburn 3064	Yes	
16 June	Sunday	2:00pm - 6:00pm	Ramnish& Bhawana	13 Tarcoola Crescent, Point Cook 3030	Yes	
17 June	Monday	7:00pm - 9:00pm	Amar & Anu Rana	9 Sunlight Ave, Epping 3076	Yes	
18 June	Tuesday	7:00pm - 9:00pm	Shree Ram Krishna Mandir	17 Malcolm Place, Campbellfield 3061	No	
19 June	Wednesday	7:00pm - 9:00pm	Pratik Parikh	13 Tarbet Ct, Endeavour Hills 3802	Yes	
20 June	Thursday	7:00pm - 9:00pm	Rohit Sharma	12 Regent Street, Mernda 3754	Yes	
21 June	Friday	7:00pm - 9:00pm	Neeraj	75 Bluebell Drive, Craigieburn 3064	Yes	
22 June	Saturday	4:00pm - 7:00pm	Kirtan	Address Pending	Yes	
23 June	Sunday	2:00pm - 6:00pm	Gursharan Verma	11 Grandstand Way, Wollert 3750	Yes	
24 June	Monday	7:00pm - 9:00pm	Gursharan Verma	11 Grandstand Way, Wollert 3750	Fruit Prasad	
25 June	Tuesday	7:00pm - 9:00pm	Gursharan Verma	11 Grandstand Way, Wollert 3750	Fruit Prasad	
26 June	Wednesday	7:00pm - 9:00pm	Gursharan Verma	11 Grandstand Way, Wollert 3750	Fruit Prasad	
27 June	Thursday	7:00pm - 9:00pm	Gursharan Verma	11 Grandstand Way, Wollert 3750	Fruit Prasad	
28 June	Friday	7:00pm - 9:00pm	Gursharan Verma	11 Grandstand Way, Wollert 3750	Fruit Prasad	
29 June	Saturday	2:00pm - 6:00pm	Gursharan Verma	11 Grandstand Way, Wollert 3750	Yes	Ekadasi
30 June	Sunday	2:00pm - 6:00pm	Shree Ram Krishna Mandir	17 Malcolm Place, Campbellfield 3061	Yes	

जब तक थोड़ा भी सहारा दुनिया का रहता है, तब तक राधा-कृष्ण की प्राप्ति नहीं होती है। बिल्कुल भूल जाओ, कौन माँ? कौन बाप? कौन बहन? कौन भाई? उसी को सर्वभाव की शरणागति कहते हैं।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।

तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥

(गी. १८/६२)

भारतीय-संस्कृति की सनातन-शक्ति

श्रीबाबामहाराज के सत्संग (२२/७/२०१६,१०/४/२०१८) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- बालसाध्वी दुर्गा जी, दीदीजी गुरुकुल, मानमन्दिर, बरसाना

विश्व में किसी के पास कोई शक्ति न थी, न है, न होगी | जैसा कि प्रह्लादजी ने हिरण्यकशिपु से कहा – "पिता जी ! तुम्हारे पास क्या शक्ति है ? शक्ति तो केवल भगवान् की ही है |" **न केवलं मे भवतश्च राजन् स वै बलं बलिनां चापरेषाम् | परेऽवरेऽमी स्थिरजङ्गमा ये ब्रह्मादयो येन वशं प्रणीताः ॥** (भागवत ७/८/८) शक्ति तो एक ही है, मनुष्य गलती से अपने आप को शक्तिशाली समझ लेता है | कोई देश हो, चाहे महाशक्तिशाली राष्ट्र हो, किसी में कोई शक्ति नहीं है | जो चीन कभी सिरदर्द था, आज भारत ने विश्व की राजनीति में उसको पीछे कर दिया है | ये सब कैसे हो रहा है, बिना प्रभु की इच्छा के ये नहीं होता | कुछ समय पहले लोगों ने कहा था कि भारत को चीन से खतरा है परन्तु सत्य तो यह है कि भारत को खतरा तब भी नहीं था जब हिरण्यकशिपु, रावण, कंस आदि थे क्योंकि भागवत में कहा गया है –

यत्र यत्र हरेरर्चा स देशः श्रेयसां पदम् |

(भागवत ७/१४/२९)

जहाँ-जहाँ भगवान् की आराधना होती है, उस देश में कल्याण ही होता है | भारत में गाँव-गाँव में आध्यात्मिकता है | इसलिए अगर आज विश्व-युद्ध भी हो जाए तब भी भारत का सर्वनाश नहीं हो सकता और परिस्थितियाँ बदल रही हैं | जो चीन एक ऐसी शक्ति के रूप में उभरा था जिससे अमेरिका भी डरने लग गया, रूस भी डरने लग गया, आज वही चीन विश्व में भारत की बढ़ती हुई शक्ति और प्रतिष्ठा के कारण उससे सीधे टकराव लेने या आक्रामकता दिखाने की स्थिति में नहीं रह गया है | आज भारतवासी में हिम्मत है और धीरे-धीरे भारत बढ़ रहा है तथा भारत कहाँ तक बढ़ेगा, इसके बारे में विश्वविख्यात भविष्यदृष्टा नास्त्रेदमस ने भविष्यवाणी किया था कि आगे चलकर भारत ही विश्व की सबसे बड़ी शक्ति बनेगा और वह लक्षण अब दिखाई पड़ रहा है | इसीलिए केवल भगवान् की शक्ति ही शक्ति है, छल-बल कोई कितना भी कर ले, उसे अंत में मुँह की ही खानी पड़ती है, शक्ति तो केवल भगवान् की ही है | भारतवर्ष की आध्यात्मिक संस्कृति अमर है | 'अलीगढ़' अर्थात् सखियों का गढ़, किसी समय यह नाम सोच कर रखा गया था, जब ब्रज का विस्तार था | ब्रज का विस्तार अलीगढ़, हाथरस आदि इलाकों में भी है | ग्रन्थ 'रसीली ब्रजयात्रा' के द्वितीय खण्ड में इसे लिखा गया है | अलीगढ़ और हाथरस – दोनों जिले के क्षेत्र ब्रज में आते हैं | जब स्वामी हरिदास जी का प्राकट्य हुआ तब अलीगढ़ का नाम हरिदासपुर भी पड़ा लेकिन इसका पुराना नाम अलीगढ़ ही है, जब श्री-जी की सखियाँ थीं और उनके नाम पर सारा ब्रज चलता था | काल के क्रम से ब्रज में भी यवनों का आक्रमण हुआ | बरसाने पर भी यवनों का हमला हुआ, तब श्री-जी ने स्वयं बरसाने की रक्षा किया, कैसे किया? यह एक चमत्कार है | इसी प्रकार, किसी समय अलीगढ़ भी यावनी-संस्कृति के इतने दबाब में आया कि इसे लोग पाकिस्तान का एक छोटा रूप समझने लगे | मुसलमानों की संख्या कम होते हुए भी उनका इतना प्रभाव हुआ कि हिन्दुओं की नहीं चलती थी | बहुत साल पुरानी बातें हैं जब देश का विभाजन हुआ, उस समय यह संशय था कि अलीगढ़ भारत में रहेगा कि यहाँ से अलग होगा | धीरे-धीरे भारतवर्ष में हिन्दुओं का प्रभाव बढ़ा और इतना बढ़ा कि आज कुछ प्रान्तों को छोड़कर शेष प्रान्तों में हिन्दू प्रधान शासन है और गौ-रक्षा भी हो रही है | भक्तजनों को अब अच्छा अवसर मिला है, उन्हें अपनी ब्रज-संस्कृति की विशेष उन्नति व विस्तार करना चाहिए |